Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ؕ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ○

(सूरः आराफ़ : 127)

अनुवाद : और तू हम पर कोई तान नहीं करता परन्तु यह कि हम अपने रब के निशानात पर ईमान ले आए जब वे हमारे पास आए। हे रब! हम पर सब्र उंडेल और हमें मुस्लमान होने की हालत में वफ़ात दे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 33

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

19 मोहर्रम 1443 हिज्री कमरी, 18 ज़हूर 1401 हिज्री शम्सी, 18 अगस्त 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

बेचने वाला और ख़रीदने वाला यदि सच्च बोलें तो उनके बेचने और ख़रीदने में बरकत होगी

(2079) हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेचने वाला और ख़रीदने वाला दोनों (सौदे को तौड़ देने) का इख़तियार रखते हैं जब तक कि वे जुदा न हो जाएं या फ़रमाया उस वक़्त तक कि वे जुदा हो जाएं। अगर इन दोनों ने सच्चाई से काम लिया और साफ़-साफ़ बात की तो दोनों की ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त में बरकत दी जाएगी और अगर इन दोनों ने छुपाया हो और झूठ बोला हो तो उनकी ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त की बरकत मिटा दी जाएगी।

यदि कोई बिना दावत के आमंत्रित लोगों के साथ आजाए

(2081) हज़रत अबू मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है, उन्होंने कहा एक अंसारी व्यक्ति आया, जिसका उपनाम अबू शुऐब था, उसने अपने एक लड़के को जो क़स्साब था कहा कि मेरे लिए खाना तैयार कर दो जो पाँच आदमियों के लिए काफ़ी हो क्योंकि मैं चाहता हूँ नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दावत दूं ... मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके चेहरा में भूख महसूस की। इसलिए उसने (लोगों) को बुलाया तो उनके साथ एक और शख़्स भी आगया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह हमारे साथ आ गया है, यदि तुम उसे चाहो तो इजाज़त दे दो और अगर चाहो कि लौट जाए तो लौट जाएगा। उसने कहा नहीं बल्कि मैंने उसको इजाज़त दे दी है।

बुख़ारी, भाग 4 किताबुल बियू, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

क़ुरआनी उलूम के जानने के लिए तक़्वा शर्त है संसारिक और रस्मी उलूम के हासिल करने के वास्ते तक़्वा शर्त नहीं है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हक़ीक़त में रूह की तसल्ली और तृप्त और संतुष्ट का सामान और वह बात जिससे रूह की हक़ीक़ी ज़रूरत पूरी होती है क़ुरआन-ए-करीम ही में है। इस लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ और दूसरी जगह कहा لَا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल्- वाकिया : 80) مُطَهَّرُوْن से मुराद वही मुत्तक़ीन हैं जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ में वर्णन हुए हैं। इस से साफ़ तौर पर मालूम हुआ कि क़ुरआनी उलूम के जानने के लिए तक़्वा शर्त है। उलूम ज़ाहेरी और उलूम क़ुरआनी के हुसूल के दरमयान एक अज़ीमुश्शान अंतर है। संसारिक और रस्मी उलूम के हासिल करने के वास्ते तक़्वा शर्त नहीं है। व्याकरण, चिकित्सा, दर्शनशास्त्र, भौतिक विज्ञान वैद्यक पढ़ने के वास्ते यह ज़रूरी अमर नहीं है कि वह नमाज़ रोज़ों का पाबंद हो, ख़ुदा के आदेशों और निषेध को हर समय समक्ष रखता हो। अपनी हर बात और कार्य को अल्लाह तआला के अहकाम के नीचे रखे। बल्कि बसा-औक़ात क्या उमूमन देखा गया है कि संसारिक उलूम के माहिर और तलबगार नास्तिक हो कर हर किस्म के दुष्कर्मों में ग्रस्त होते हैं। आज दुनिया के सामने एक ज़बरदस्त अनुभव मौजूद है। यूरोप और अमरीका बावजूद इसके कि वे लोग भोतिक ज्ञान में बड़ी बड़ी तरक़्कीयां कर रहे हैं और आए दिन नई ईजादात करते रहते हैं लेकिन उनकी रुहानी और अख़लाक़ी हालत बहुत कुछ काबिले शर्म है। लंडन के पार्कों और पैरिस के होटलों के हालात जो कुछ प्रकाशित हुए हम तो उन का वर्णन भी नहीं कर सकते। परन्तु उलूम-ए-आसमानी और असरार-ए-क़ुरआनी की वाक़फ़ीयत के लिए तक़्वा पहली शर्त है। इस में तौबतुन-नसूह (सच्ची तौबा) की ज़रूरत है। जब तक इन्सान पूरी विनम्रता और दीनता के साथ अल्लाह तआला के अहकाम को न उठा ले और इस के प्रताप और वैभव से लर्ज़ां हो कर नयाज़ मंदी के साथ रुजू न करे, क़ुरआनी उलूम का दरवाज़ा नहीं खुल सकता और रूह के इन ख़वास और अंगों की परवरिश का सामान उसको क़ुरआन शरीफ़ से नहीं मिल सकता जिस को पा कर रूह में एक लज़्ज़त और तसल्ली पैदा होती है। क़ुरआन शरीफ़ अल्लाह तआला की किताब है और उसके उलूम ख़ुदा के हाथ में हैं। अतः उसके लिए तक़्वा बतौर सीढ़ी के है। फिर क्योंकर मुम्किन हो सकता है कि बेईमान, शरीर, ख़बीसुल नफ़्स, अस्थाई इच्छाओं के असीर उनसे अवगत हों। इस वास्ते अगर एक मुस्लमान मुस्लमान कहला कर ख़ाह वह व्याकरण, अर्थ और अभूत पूर्व इत्यादि उलूम का कितना ही बड़ा फ़ाज़िल क्यों न संसार की नज़र में सबसे बड़ा ज्ञानी ही क्यों न बना बैठा हो, लेकिन अगर तज़किया नफ़्स नहीं करता, क़ुरआन शरीफ़ के उलूम से इस को हिस्सा नहीं दिया जाता। (मल्-फ़ूज़ात भाग 1, पृष्ठ 384 प्रकाशन क़ादियान 2018)

★ ★ ★

अदल के अर्थ बराबरी के होते हैं अर्थात इन्सान दूसरे से ऐसा व्यवहार या मामला करे जैसा कि उसके साथ किया जाता है

अल्लाह तआला से अदल करने कि ये अर्थ हैं कि उसका हक़ अल्लाह की अतिरिक्त किसी को न दे और शिर्क में मुबतला न हो

एहसान का मफ़हूम यह है कि यह नहीं देखना चाहिए कि दूसरा हमसे क्या व्यवहार करता है बल्कि अगर वह बुरा व्यवहार करता है तब भी हम उसके साथ अच्छा ही व्यवहार करें

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर अल् नहल आयत : 91 اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

देखो कितनी छोटी सी आयत है परन्तु इस में तकमील के दोनों पहलू (इंकार और इकरार) किस ख़ूबी और ख़ुश-उस्लूबी से जमा किए गए हैं। तीन बातों अर्थात अदल, एहसान और ایتاء ذی القربیٰ के करने का हुक्म दिया गया है और तीन बातों अर्थात व्यभिचार घृणित और अवज्ञा से रोका गया है। अदल के अर्थ बराबरी के होते हैं अर्थात इन्सान दूसरे से ऐसा सुलूक या मामला करे जैसा कि उसके साथ किया जाता है। उस पर ज़ुलम किया जाता है तो वह इतना बदला ले सकता है जितना ज़ुलम हुआ है परन्तु इस से ज़्यादा सख़्ती नहीं कर सकता। अगर कोई शख़्स उस से हुस्न-ए-सलूक का मुआमला करता है तो उसका भी फ़र्ज़ है कि कम से कम इतना हुस्न-ए-सुलूक उस से करे।

शेष पृष्ठ 05 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक तर्ज़-ए-अमल और अहादीस मुबारका की रोशनी में पहले वर्णन हो चुका है कि

न तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी केवल नबुव्वत का दावा करने पर कोई कार्रवाई फ़रमाई और न ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ये जंगी मुहिम्मात केवल इस वजह से थीं कि झूठी नबुव्वत का दावा करने वालों का अंत किया जाता बल्कि असल सोच उन लोगों की बाग़ियाना थी

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बाबरकत दौर में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 जुलाई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

मुस्लमानों की मुर्तद होने वाले बाग़ीयों के ख़िलाफ़ कार्यवाईयों का वर्णन हो रहा है। इस बारे में हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु की किन्दा और हज़र मौत के इलाक़ों में मुर्तद होने वाले के ख़िलाफ़ जो कार्यवाहियां थीं इस में मज़ीद वर्णन हुआ है कि जब सना में हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु को मज़बूती प्राप्त हो गई, पांव टिक गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़त के ज़रीया से अपनी समस्त कार्यवाईयों से अवगत किया और जवाब का इंतिज़ार करने लगे और उसी वक़्त मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु और यमन के दीगर अमाल ने जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर से चले आ रहे थे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ुतूत इरसाल किए और मदीना वापस आने की इजाज़त तलब की तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथ एनी उम्माल को इख़्तेयार दिया कि चाहें तो यमन में रहें और चाहें तो मदीना वापस आ जाएं लेकिन अपनी जगह किसी को मुक़र्रर कर के आएं। इख़्तेयार मिलने के बाद तमाम ही लोग मदीना वापस आ गए और हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म मिला कि अकरमा से जा मिलो। फिर दोनों मिलकर हज़ पहुँचो और ज़ियाद बिन लबीद का साथ दो और उनको उनके ओहदे पर बाक़ी रखते हुए हुक्म फ़रमाया कि तुम्हारे साथ मिलकर जो लोग मक्का और यमन के दरमयान जिहाद करते रहे हैं उन्हें लौटने की इजाज़त दे दो, वापस आना चाहें तो वापस आ जाएं मगर यह कि बज़ात-ए-ख़ुद जिहाद में शिरकत को तर्जीह दें।(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली पृष्ठ 305अल् फ़ुर्कान ट्रस्ट ख़ानगढ़) सिवाए इसके कि ख़ुद लोग कहें कि हम जिहाद में शामिल होना चाहते हैं।

अकरमा को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त मौसूल हुआ। इस में उन्हें हुक्म दिया गया था कि मुहाजिर बिन अबू उमय्या से जा मिलो जो सना से आ रहे हैं और फिर दोनों मिल कर किन्दा क़बीले का रुख करो। यह ख़त पा कर अकरमा महर से निकले और अबयन में क़ियाम पज़ीर हो कर मुहाजिर बिन अबू उमय्या का इंतेज़ार करने लगे। अबयन भी यमन की एक बस्ती का नाम है।

(सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी, पृष्ठ 305 अल् फ़ुर्कान ट्रस्ट ख़ानगढ़)

किनदा क़बीला के मुर्तद होने वाले के ख़िलाफ़ कार्यवाईयों के सम्बन्ध में तारीख़ तिबरी में लिखा है कि मुर्तद होने से पहले जब किन्दा और हज़र मौत का सारा इलाक़ा इस्लाम ले आया। उनसे ज़कात वसूल करने के सम्बन्ध में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया था कि हज़ में से कुछ लोगों की ज़कात किन्दा में जमा की जाए और कुछ किन्दा वालों की ज़कात हज़ में जमा की जाए अर्थात उनको वहां भिजवा दी जाए, एक दूसरे पर ख़र्च हो और अहले हज़र मौत में से कुछ की ज़कात सकून में जमा की जाए और कुछ अहल-ए-सकून की ज़कात हज़र मौत में जमा की जाए। इस पर किनदा के कुछ लोगों ने कहा हे रसूलुल्लाह हमारे पास ऊंट नहीं हैं। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुनासिब ख़्याल फ़रमाएं तो ये लोग सवारी पर हमारे पास ज़कात का धन पहुंचा दिया करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों से कहा यानी हज़र वालों से कि अगर तुम ऐसा कर सकते हो तो इस पर अमल करना। उन्होंने कहा हम देखेंगे। अगर उनके पास जानवर न हुए तो हम ऐसा करेंगे। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और ज़कात वसूल करने का वक़्त आया तो ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को अपने पास बुलाया। वे आपके पास हाज़िर हुए और बनू वालिया यानी अर्थात किन्दा वालों ने कहा कि तुमने जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा किया था ज़कात का धन हमारे पास पहुंचा दो तो उन्होंने कहा तुम्हारे पास बार बर्दारी के जानवर हैं? अपने जानवर लाओ और ज़कात का धन ले जाओ। उन्होंने ख़ुद ज़कात का धन पहुंचाने से इन्कार कर दिया और कुंदी अपने मुतालेबा पर डटे रहे। फिर वे लोग अपने घरों को वापस चले गए। उनका तर्ज़-ए-अमल डोल गया। एक क़दम आगे बढ़ाते और दूसरा पीछे हटाते और ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु, मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिज़ार में उनके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई करने से रुके रहे यानी जो ज़कात देने से इंकारी थे उनसे कोई कार्रवाई नहीं की यहाँ तक कि हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु आजाऐं। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुहाजिर और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़त भेजा कि तुम दोनों हज़ रवाना हो जाओ और ज़ियाद को उनकी ज़िम्मेदारी पर बरक़रार रखना, मक्का से लेकर यमन तक के दरमयानी इलाक़े के जो लोग तुम्हारे साथ हैं उनको वापस जाने की इजाज़त दे दो सिवाए उन लोगों के जो अपनी ख़ुशी से जिहाद में शरीक होना चाहें और उबै बिन सइद को ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद के लिए रवाना करो। इसलिए हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस इरशाद पर अमल किया। वे सना से हज़रमौत के इरादे से रवाना हुए और अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु अबयन से हज़र के इरादे से रवाना हुए और मारिब स्थान पर दोनों मिल गए। इन दोनों ने सुहेब सेहरा को पार किया यहां तक कि हज़र पहुंच गए। जब कुंदी हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़फ़ा हो कर वापस चले गए तो हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बनू अम्र से ज़कात की वसूली अपने ज़िम्मा ले ली। किनदा के एक नौजवान ने हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़लती से अपने भाई की ऊंटनी ज़कात के लिए पेश कर दी। हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको आग से दाग़ कर ज़कात का निशान लगा दिया। महर लगा दी कि यह बैतुल-माल की है और ज़कात का माल है और जब इस लड़के ने ऊंटनी बदलने का कहा कि ग़लती से हो गया था तो हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु समझे कि यह बहाने बना रहा है। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु राज़ी न हुए। इस पर उन्हों ने अर्थात ऊंटनी देने वालों ने अपने क़बीले के लोगों को और अबू सुमैत को मदद के लिए पुकारा। अबू सुमैत ने जब हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु से ऊंटनी बदलने का मुतालिबा किया तो हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने मत पर डटे रहे। अबू सुमैत को ग़ुस्सा आया। उसने ज़बरदस्ती ऊंटनी खोल दी जिस पर हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों ने अबू सुमैत और उसके साथियों को क़ैद कर लिया और ऊंटनी को भी क़बज़ा में ले लिया। इन लोगों ने एक दूसरे को मदद के लिए पुकारा। इसलिए बनू माविया अबू सुमैत की मदद के लिए आगए। बनू माविया वे लोग हैं जो बनू हारिस बिन मुआविया और बनू अम्र बिन माविया, क़बीला किन्दा की शाख़ें हैं। उन्होंने हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु से

शेष पृष्ठ 8 पर

जुमअःतुल मुबारक़ के दिन क़बूलीयत-ए-दुआ की ख़ास घड़ी का कौन सा वक़्त है? जलसा सालाना यू.के 2019 ई. के आख़िरी दिन के ख़िताब में नमाज़ तरावीह में पूरा सिपारा पढ़ने की बजाय छोटी सूरतें पढ़ने के बारे में हुज़ूर अनवर के इरशाद के बारे में मज़ीद वज़ाहत

विधवा के सोग तथा बाक़ी लोगों के सोग वशेषता भाई की वफ़ात पर बहन के सोग के बारे में इस्लामी अहकामात क्या हैं? क्या अकेली औरत हज पर जा सकती है?

एक मोमिन के लिए हमेशा भलाईयां ही आती हैं लेकिन दूसरी तरफ़ यह भी है कि यह दुनिया मोमिन के लिए जहन्नुम है। इस में कौन सी बात ठीक है? तथा यह कि क्या यह दरुस्त है कि अगर एक नमाज़ रह जाए तो पिछली चालीस साल की नमाज़ें ज़ाए हो जाती हैं?

मुरब्बियान सिलसिला किस तरह हुज़ूर अनवर के सुलताने नसीर बन सकते हैं?

सर्दीयों में तो इन्सान आसानी से तहज्जुद के लिए उठ सकता है लेकिन मुस्तक़िल तौर पर और उन देशों में गरमियों में इसकी आदत डालने का बेहतरीन तरीका क्या है?

देखने में आता है कि नौजवान नसल का ज़्यादा वक़्त बाहर के समाज के प्रभाव में गुज़रता है,उन्हें हम जमाअत के क़रीब कैसे ला सकते हैं?

कुछ दूसरी कौमें जो जमाअत में शामिल हो रही हैं, वे जमाअत के ज्ञान से तो बहुत प्रभावित होती हैं लेकिन जमाअती निज़ाम और विशेषता माली क़ुर्बानी में वे पूरी तरह शामिल नहीं हो पाते और मुक़ामी जमाअत के साथ भी उनके मज़बूत राबते नहीं हो पाते, इस बारे में हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में राहनुमाई की दरख़ास्त है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त-20)

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के एक ख़ुतबा जुमा में वर्णन जुमअःतुल मुबारक़ के दिन क़बूलीयत दुआ की ख़ास घड़ी के वक़्त के बारे में हुज़ूर अनवर के इरशाद, इसी तरह जलसा सालाना यू.के 2019 के आख़िरी दिन के ख़िताब में नमाज़ तरावीह में पूरा सिपारा पढ़ने की बजाय छोटी सूरतें पढ़ने के बारे में हुज़ूर अनवर के इरशाद के बारे में मज़ीद वज़ाहत चाही? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 04 फ़रवरी 2020 में इन दोनों उमूर की मज़ीद वज़ाहत करते हुए फ़रमाया :

उत्तर : मैंने अपने ख़ुतबा जुमा में जुमा के रोज़ आने वाली क़बूलीयत दुआ की ख़ास घड़ी के बारे में अहादीस और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इर्शादात की रोशनी में वर्णन किया था कि एक तो यह बहुत मुख़्तसर घड़ी होती है और दूसरा उसके मुख़्तलिफ़ वक़्त वर्णन हुए हैं। उलमाए हदीस और फुक़हा ने भी इस घड़ी का वक़्त-ए-ज़वाल आफ़ताब से लेकर सूरज ग़ुरूब होने तक मुख़्तलिफ़ वक़्तों में वर्णन किया है।

मेरे नज़दीक उस घड़ी के मुख़्तलिफ़ वक़्त वर्णन होने में हिक्मत यह है कि जुमा का सारा दिन ही बहुत बरकत वाला है इसलिए यह सारा दिन ही इन्सान को दुआओं में गुज़ारना चाहिए।

जहां तक नमाज़ को मुख़्तसर करने की बात है तो इस बारे में आपने मेरी दो बातों को आपस में उलझा दिया है। हदीस के हवाले से एक बात मैंने ये बताई कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में किसी ने एक इमाम की शिकायत की जो बहुत लंबी नमाज़ पढ़ाता था। और इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया।

फिर मैंने यह बात की थी कि नमाज़ के मुख़्तसर करने का यह मतलब नहीं कि जल्दी जल्दी टक्करें मार कर नमाज़ पढ़ी जाए और इस ज़िमन में बतौर मिसाल मैंने सोशल मीडीया पर दिखाई जाने वाली एक नमाज़ तरावीह का वर्णन किया था जिसमें इमाम चंद मिनटों में नमाज़ तरावीह की सारी रकातें पढ़ा देता है।

अतः असल बात यह थी कि न नमाज़ को इतना लंबा करना चाहिए कि मुक़तदी उकता जाएं और उनके दिल में नमाज़ के लिए नफ़रत पैदा हो और न ही नमाज़ को इस क़दर मुख़्तसर करने की इजाज़त है कि वह नमाज़ नहीं बल्कि टक्करें मारना दिखाई दे।

फिर इस के साथ यह बात भी याद रखनी चाहिए कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस नमाज़ के मुख़्तसर करने की हिदायत फ़रमाई है वह फ़र्ज़ नमाज़ है। और इस की वजह यह है कि फ़र्ज़ नमाज़ें समस्त मर्दों पर बाजमाअत अदा करना लाज़िम हैं। और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि चूँकि मुक़तदियों में बीमार,बूढ़े, कमज़ोर और काम काज पर जाने वाले भी होते हैं, इसलिए इमाम की ज़िम्मेदारी है कि इन सब का ख़्याल रखते हुए नमाज़ को मुनासिब वक़्त में पढ़ाए।

लेकिन नमाज़ तरावीह चूँकि नफ़ली नमाज़ है और इसके लिए कोई ऐसी शर्त नहीं कि तमाम लोग ज़रूर इस में शामिल हों। बल्कि जो आसानी से इस में शामिल हो सके उसे शामिल होना चाहिए और जिसे कोई काम हो वे बे-शक शामिल न हों। इस में कोई हर्ज नहीं। दूसरा नमाज़ तरावीह का आग़ाज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के अह्द ख़िलाफ़त में हुआ और आपने खासतौर पर क़ुरआन-ए-करीम की करायत के लिए ही इस को जारी फ़रमाया था। इसलिए

इस में निसबतन लंबी किरात होनी चाहिए और अगर मुम्किन हो तो रमज़ानुल मुबारक में नमाज़ तरावीह में क़ुरआन-ए-करीम की पूर्ण करना चाहिए।

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में अपने भाई की वफ़ात का वर्णन करके बेवा के सोग तथा बाक़ी लोगों के सोग विशेषता भाई की वफ़ात पर बहन के सोग के बारे में इस्लामी अहकामात दरयाफ़त किए? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 04 फ़रवरी 2020 में इस सवाल का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया :

उत्तर : इस्लाम ने अपने अनुयायियों की ख़ुशी और ग़मी के हर मामले में राहनुमाई फ़रमाई है। इसलिए किसी प्यारे की वफ़ात पर सब्र करने की तलक़ीन के साथ उस की जुदाई के ग़म के इज़हार की भी इजाज़त दी और समस्त अज़ीज़ों को जिन में वफ़ात पाने वाले के वालदैन, बहन भाई और औलाद इत्यादि सब शामिल हैं, ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन तक सोग की इजाज़त दी है। जबकि बीवी को अपने ख़ावंद की वफ़ात पर चार माह दस दिन तक सोग की हिदायत फ़रमाई है, जिसका क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल्-बक़रः में वर्णन है। तथा अहादीस में भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मवाक़े पर इस का इरशाद फ़रमाया है। इसलिए हज़रत ज़ैनब बिंत अबी सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा (जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रबीबा थीं) से रिवायत है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पत्नी मुहतरमा हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गई तो उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना है कि किसी ऐसी औरत के लिए जो अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखती हो जायज़ नहीं कि किसी मय्यत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग करे सिवाए शौहर की वफ़ात के कि इस पर वे चार महीने दस दिन सोग करेगी। (राविय कहती हैं फिर जब हज़रत ज़ैनब बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई की वफ़ात हुई तो मैं उनके पास गई। (और जब उनके भाई की वफ़ात पर तीन दिन गुज़र गए तो) उन्होंने ख़ुशबू मँगवाई और उसे अपने पर लगाया और फिर कहा कि मुझे ख़ुशबू की हाजत नहीं थी मगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मंच पर फ़रमाते हुए ख़ुद यह सुना है कि अल्लाह और क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाली किसी औरत के लिए जायज़ नहीं कि तीन दिन से ज़्यादा किसी मय्यत पर सोग करे। सिवाए अपने शौहर की वफ़ात पर, कि उस पर वह चार माह दस दिन तक सोग करेगी।

(बुख़ारी किताब الجنائز بَابِ إِحْدَادِ الْمَرْأَةِ عَلَى غَيْرِ زَوْجِهَا)

अतः विधवा के इलावा बाक़ी समस्त अज़ीज़ों के लिए ख़ाह वे माता पिता हों, औलाद हो या बहन भाई हों, सबको सिर्फ तीन दिन तक सोग की इजाज़त है, इस से ज़्यादा नहीं।

जहां तक विधवा के (चार माह दस दिन के) सोग की हदूद का ताल्लुक़ है तो इस्लाम ने इस में न तो किसी किस्म का कोई इस्तिस्ना रखा और न ही इस हुक्म में आयु की कोई रियाइत रखी है। अतः बेवा के लिए ज़रूरी है कि वह इद्दत का यह अरसा जहा तक सम्भव हो अपने घर में गुज़ारे। इस दौरान उसे बनाओ सिंघार करने, सोशल प्रोग्रामों में हिस्सा लेने और बग़ैर ज़रूरत घर से निकलने की इजाज़त नहीं।

इद्दत के अर्से के दौरान विधवा अपने पति की क़ब्र पर दुआ के लिए जा सकती है इस शर्त के साथ कि वे क़ब्र उसी शहर में हो जिस शहर में विधवा की रिहाइश है। तथा अगर उसे डाक्टर के पास जाना पड़े तो यह भी मजबूरी के तहत आता है। इसी तरह अगर किसी बेवा के ख़ानदान का गुज़ारा उसकी नौकरी पर है जहां से उसे रुख़स्त मिलना मुम्किन नहीं, या बच्चों को स्कूल लाने ले जाने और ख़रीदारी के लिए उसका कोई और इंतिज़ाम नहीं तो यह सब उमूर मजबूरी के तहत आएँगे। ऐसी सूरत में उसके लिए ज़रूरी है कि वे सीधी काम पर जाए और काम मुकम्मल करके वापस घर आकर बैठे। मजबूरी और ज़रूरत के तहत घर से निकलने की बस उतनी ही हद है। किसी किस्म की सोशल मजालिस या प्रोग्रामों में शिरकत की उसे इजाज़त नहीं।

प्रश्न : क्या अकेली औरत के हज पर जाने के बारे में मुहतरम नाज़िम साहिब दारुल इफ़्ता के जारी करदा एक फ़तवा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 04 फ़रवरी 2020 में निमंलिखित इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : मेरे नज़दीक हज और उमरा के लिए औरत के साथ मुहर्रम की शर्त एक वक़्ती हुक्म था बिल्कुल इसी तरह जिस तरह इस ज़माना में अकेली औरत के लिए आम सफ़र भी मना था, क्योंकि उस वक़्त एक तो सफ़र बहुत मुश्किल और लंबे होते थे, रास्तों में किसी किस्म की सहूलतें उपलब्ध नहीं थीं और उल्टा यात्राओं में लूटपाट के ख़तरात बहुत ज़्यादा थे। इसलिए एक अवसर पर जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में राहज़नी की शिकायत की गई तो आपने आइन्दा ज़माना के शन्ति प्रिय सिफ़रों की बशारत देते हुए हज़रत अदी बिन हातिम को फ़रमाया :

فَإِنْ طَالَتْ بِكَ حَيَاةٌ لَتَرَيَنَّ الظَّعِينَةَ تَرْتَحِلُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لَا تَخَافُ أَحَدًا إِلَّا اللهَ۔

अर्थात अगर तुम्हारी ज़िंदगी ज़्यादा हुई तो निसंदेह तुम देख लोगे कि एक हौदज नशीं औरत हीरा से चल कर काबा का तवाफ़ करेगी, अल्लाह के इलावा उसको किसी का ख़ौफ़ नहीं होगा।

इसी हदीस के आख़िर पर हज़रत अदी बिन हातिम वर्णन करते हैं :

فَرَأَيْتُ الظَّعِينَةَ تَرْتَحِلُ مِنَ الْحِيرَةِ حَتَّى تَطُوفَ بِالْكَعْبَةِ لَا تَخَافُ إِلَّا اللهَ۔

अर्थात : मैंने हौदज नशीन औरत को देखा है कि वह हीरा से सफ़र शुरू करती है और काबा का तवाफ़ करती है और अल्लाह के सिवा उसको किसी का डर नहीं होता।

(सही बुख़ारी किताब अल् मुनाकिब)

हीरा उस ज़माने में ईरानी हुकूमत के तहत एक शहर था जो कूफ़ा के क़रीब वाक़्य था। इस लिहाज़ से इस ज़माने में यह कई दिनों का सफ़र बनता है। अतः अगर इस ज़माने में एक औरत हीरा से चल कर कई दिनों का सफ़र कर के मक्का ख़ाना काबा का तवाफ़ करने आ सकती है तो इस ज़माने में चंद घंटों का हवाई जहाज़ का सफ़र करके एक औरत उमरा और हज इत्यादि के लिए क्यों नहीं जा सकती?

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा है कि मैंने पढ़ा है कि एक मोमिन के लिए हमेशा भलाईयां ही आती हैं लेकिन दूसरी तरफ़ यह भी है कि यह दुनिया मोमिन के लिए जहन्नुम है। इस में कौन सी बात ठीक है। तथा यह कि क्या यह दरुस्त है कि अगर एक नमाज़ रह जाए तो पिछली चालीस साल की नमाज़ें ज़ाए हो जाती हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 20 फ़रवरी 2020 में इस सवाल का निमंलिखित जवाब अता फ़रमाया :

उत्तर : दरहक़ीक़त एक सच्चे मोमिन को दुनियावी चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं होती, वे उन्हें अल्लाह के हुक्म पर सिर्फ आरिज़ी सामान के तौर पर ज़रूरत की हद तक इस्तिमाल करता है।और हरवक़त उस की नज़र अल्लाह तआला की रज़ा और उसकी ख़ुशनुदी पर होती है। अतः एक मोमिन चूँकि दुनयावी चीज़ों के पीछे नहीं भागता कि वह उस के दिल में अल्लाह तआला की याद को महव न कर दें इसलिए दुनयावी लिहाज़ से इस पर बज़ाहिर तंगी आती है लेकिन वे उस से तकलीफ़ महसूस नहीं करता बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा की ख़ातिर वह इस दुनयावी तंगी को भी ख़ुशी से बर्दाश्त कर लेता है। जिस तरह हज़रत-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि हे मेरे रब क़ैदख़ाना मुझे उन दुनियावी आसाइशों और आलाईशों से ज़्यादा महबूब है जिसकी तरफ़ ये महिलाएं मुझे बुलाती हैं। (यूसुफ़ : 34)

इसके मुक़ाबले पर एक काफ़िर चूँकि इस दुनिया को ही अपना सब कुछ ख़्याल करता और हर वक़त इसी के पीछे भागता रहता है और दुनियावी सामानों से ख़ूब आनंद उठाता और वही उसका ओढ़ना बिछौना होते हैं। अतः इस मज़मून को वर्णन करते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

कि दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिए जन्नत है।

नमाज़ के बारे में आपके सवाल का जवाब यह है कि अगर भूल कर कोई नमाज़ रह जाए तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि जब वह नमाज़ याद आए उसी वक़्त उसे पढ़ लिया जाए यही इस नमाज़ के भूलने का कफ़्फ़ारा है। लेकिन अगर जान-बूझ कर कोई नमाज़ छोड़ दी जाए तो यह बहुत बड़ा गुनाह है और इस की माफ़ी तौबा, इस्तग़फ़ार और आइन्दा ऐसी ग़लती न करने के वादे से ही हो सकती है।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ मुरब्बियान सिलसिला की जर्मनी की virtual मुलाक़ात तिथि 15 नवंबर 2020 ई. में इस सवाल पर कि हम किस तरह हुज़ूर अनवर के सुलताने नसीर बन सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : ख़लीफ़-ए-वक़्त का अगर सुलताने नसीर बनना है तो दुआओं के बग़ैर नहीं बना जा सकता। और दुआओं के लिए, सबसे ज़ियादा अल्लाह तआला का क़ुरब पाने के लिए नफ़ल हैं। फ़रायज़ तो आप लोग अदा करते ही हैं। अगर नहीं अदा करेंगे तो फिर एक मुस्लमान की जो एक बुनियादी category है इस में भी नहीं आते। लेकिन फ़रायज़ अदा करने के बाद जो नवाफ़िल हैं वे असल चीज़ हैं जो आप लोगों को अल्लाह तआला का क़ुरब भी दिलाएंगे। और ख़िदमत के मौक़े भी ज़्यादा मयस्सर आएँगे। और उनमें बरकत भी पड़ेगी। और ख़लीफ़-ए-वक़्त के सुलतान नसीर बनने की भी तौफ़ीक़ मिलेगी। इसलिए हर मुरब्बी का फ़र्ज़ है के कम से कम (एक घंट-ए-तहज्जुद पढ़े) आजकल तो वैसे भी एक घंटा तहज्जुद पढ़ना कोई मसला नहीं है। आजकल तो दो घंटे भी पढ़ी जा सकती है। लेकिन आम हालात में भी हर एक को कम से कम एक घंटा तो तहज्जुद पढ़नी चाहिए। सिवाए इसके कि कोई मजबूरी हो, कोई बीमार है, कोई बूढ़ा हो गया है उसकी तो और बात है नाँ। बाक़ी तो उसके बग़ैर गुज़ारा ही नहीं है। इस तरफ़ ख़ास तवज्जा दें। ज़िक्र-ए-इलाही की तरफ़ भी ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए। बजाय इसके कि यह सोचते रहें कि आज हमने अमुक स्टोर में जाना है, अमुक जगह अमुक अच्छी चीज़ आई हुई है। या मैंने अमुक दुनियावी काम करना है। या अमुक जगह मज्लिस जमी हुई है वहां बैठना है। अपना वक़्त ज़ाए करने की बजाय अपनी रूहानियत को बढ़ाने की तरफ़ तवज्जा दें। और यह बढ़ेगी तो तभी आप इन्क़िलाब ला सकते हैं। निरे तराने पढ़ने से और नारे लगाने से कभी दुनिया में इन्क़िलाब नहीं आया करते और न आपके कामों में बरकत पड़ सकती है। इसलिए पहली बात तो यह है कि अपनी रुहानी हालत को बेहतर बनाएँ। और आप लोग जो मुरब्बियान हैं अपनी जमाअत के अफ़राद के लिए नमूना बनने की कोशिश करें और एक role model हों। हर एक आपको देखकर कह सके कि हाँ वाक़ई मुरब्बी साहिब का ताल्लुक़ बिल्लाह भी है, और तवज्जा भी है, और हमदर्दी ख़लक़ भी है, और अफ़राद जमाअत से प्यार और मुहब्बत का सुलूक भी है। ये चीज़ें पैदा करेंगे तो तभी आप लोगों को कामयाबियां मिलेंगी। अपने लोगों की तर्बीयत करलीं तो आपको जमाअत में ऐसे ऐसे काम करने वाले मिल जाऐंगे जो आपके मददगार होंगे, मुआविन होंगे और फिर आपके काम में आसानीयां पैदा होंगी।

शेष आगे.....

★ ★ ★

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 01 का शेष

अल्लाह तआला से अदल करने कि ये माने हैं कि जिस तरह अल्लाह तआला ने उसके साथ नेक मामला किया है यह भी उसका हक़ अदा करे और अपने वजूद से अल्लाह तआला के लिए एतराज़ात के अवसर पैदा न करे। इसी तरह यह कि इस का हक़ अल्लाह की अतिरिक्त किसी को न दे और शिर्क में मुबतला न हो क्योंकि शिर्क करना गोया ख़ुदा तआला का हक़ छीन कर दूसरे को देना है और यह ज़ुलम है। इसी वजह से क़ुरआन-ए-करीम में शिर्क का नाम ज़ुलम भी रखा गया है। अतः ख़ुदा का बेटा या बीवी या उसके साथी क़रार देना अदल नहीं बल्कि ज़ुलम है। क्योंकि ज़ुलम उसी को कहते हैं कि एक का हक़ किसी और के सपुर्द कर दिया जाए। इसी तरह अल्लाह तआला की सिफ़ात को अपनी तरफ़ मंसूब कर लेना भी अदल के ख़िलाफ़ है। उदाहरणतः शरीयत का बनाना और इलहाम-ए-इलाही का भेजना ख़ुदा तआला का काम है। अब अगर कोई शख़्स ख़ुद ही शरीयत बनाने का मुद्दई बन बैठे या इलहाम नाज़िल करने का, जैसा कि बहाउल्ला इत्यादि ने किया तो वह अदल को तोड़ता है। अगर इन्सान ख़ुदा तआला के साथ अदल करे तो शिर्क, कुफ़्र और ना-फ़रमानी सब मिट जाएं।

अदल से बढ़कर दूसरा दर्जा एहसान बताया है। एहसान का मफ़हूम यह है कि यह नहीं देखना चाहिए कि दूसरा हमसे क्या सुलूक करते है बल्कि अगर वे बुरा सुलूक करता है तब भी हम उसके साथ अच्छा ही सुलूक करें। यह मुक़ाम पहले मुक़ाम से बड़ा है। और क्षमा, दरगुज़र ग़रीबों की मदद, सदक़ा-ओ-ख़ैरात और क़ौमी ख़िदमात इत्यादि नेकियां सब उसके अंदर शामिल हैं।

उलूम की तरक़्क़ी और तदवीन के लिए कोशिश करना भी इस के अंदर आ जाता है क्योंकि इसके नतीजा में अपनों और बेगानों को जस्मानी और रुहानी लाभ और आराम पहुंचता है।

तीसरा मुक़ाम ایتاءذی القربیٰ का बताया है जिसके अर्थ "रिश्तेदारों को देना या रिश्तेदारों का देना है।" और अर्थ आयत का यह है कि बनीनौ इन्सान से ऐसा सुलूक करो जैसा कि एक रिश्तेदार दूसरे रिश्ता दार से सुलूक किया करता है।

इस सुलूक से एहसान का सुलूक मुराद नहीं क्यों कि एहसान का वर्णन पहले हो चुका है। इस सुलूक से वह सुलूक मुराद है जो मुहब्बत तिब्बी की वजह से बिना विचारों के आदान प्रदान के किया जाता है। एहसान करते वक़्त तो इन्सान को ख़्याल होता है कि अमुक शख़्स ने मुझसे अच्छा सुलूक किया है मैं इस से बेहतर बदला दूं ता मेरी नेक-नामी हो या गुनहगार की ख़ता-मुआफ़ करते हुए यह ख़्याल आ जाता है कि मैं इस से हुस्न-ए-सुलूक करूँगा तो उसके दिल से बुग़ज़ निकल जाएगा और यह मेरा दोस्त बन कर मेरी तक़वियत का कारण होगा। लेकिन माँ जो अपने बच्चा से मुहब्बत करती है और उसके लिए क़ुर्बानी करती है इस में ज़र्रा भर भी बदले की ख़ाहिश नहीं होती बल्कि उसकी मुहब्बत की बुनियाद उसकी अपनी ही क़ुर्बानी पर होती है। एक औरत के हाँ जब औलाद नहीं होती तो उसके दिल में यह ख़्याल नहीं पैदा होता कि मेरा लड़का होता तो वह मेरी ख़िदमत करता बल्कि उसे औलाद की ख़ाहिश इस भावना के साथ होती है कि मैं उसे पालती, उसकी ख़िदमत करती, उसे कपड़े पहनाती, उसे ब्याहती, उसके बच्चों को खिलाती। उद्देश्य औलाद की ख़ाहिश के वक़्त माँ के दिल में ख़िदमत लेने का छोटे से छोटा एहसास भी नहीं होता बल्कि इस ख़ाहिश का मूजिब औलाद की ख़िदमत करने का शौक़ होता है। यही वह नेकी का जज़बा है जो इन्सान के लिए सबसे बड़ी नेकी है और जिसके हुसूल के बाद इन्सान का अख़लाक़ी वजूद मुकम्मल होता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एहसान का मुक़ाम हासिल करने के बाद जबकि तुम को लेने से ज़्यादा देने की ख़ाहिश होती है तो वह मुक़ाम नेकी का भी हासिल करो कि सब बनीनौ इन्सान तुम्हें अपने बच्चे नज़र आने लगें और उनकी ख़िदमत का जोश तुम्हारे दिल में इस तरह मोजज़िन हो जाए जिस तरह एक माँ के दिल में अपने बच्चा की मुहब्बत जोश मारती रहती है।

(तफ़सीर कबीर भाग 4, पृष्ठ 220 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-3)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कोई निर्धारित आयु तो कहीं नहीं लिखी हुई परन्तु बहरहाल आदत डाल लेनी चाहिए। बचपन में बिल्कुल छोटीआयु में बच्चों को नहीं कहना चाहिए कि रोज़ा रखें। कुछ मुस्लमानों का यह हाल है कि कम आयु में बच्चों को रोज़ा रखवा देते हैं। लंबे दिन होते हैं। बच्चा प्यास से तड़प रहा होता है। इस को कमरे में बंद कर देते हैं। इस तरह पाकिस्तान में कई वाक़ियात होते हैं कि बंद कर देते हैं और शाम को जब दरवाज़ा खोलते हैं तो बचा मरा पड़ा होता है तो यह भी अत्याचार है इस की पुर्णतः आज्ञा नहीं। इस लिए जब तक तुम्हें बर्दाश्त है रख लो। एक-आध रोज़ा रख सकते हो। जिस दिन मौसम ठंडा हो उस दिन रख लिया करो। आजकल तुम्हारी आयु किसी भी रोज़े के फर्ज़ होने की नहीं है।

एक वक्फे नौ बच्चे ने दुआ की दरख़्वास्त करते हुए कहा कि मेरे कान के चार ऑप्रेशन हो चुके हैं। बाएं कान से सुनता हूँ जो दायाँ कान है ये अब तक सही नहीं हो सका।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। अल्लाह तआला फ़ज़ल करे।

एक वक्फे नौ बच्चे ने प्रश्न किया कि क़ुरआन-ए-मजीद में सूरत रहमान में जिन्न और उन्स का वर्णन है। उन्स से मुराद इन्सान और जिन्न से मुराद क्या है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। जिन्नों से मुराद बहुत सारी चीज़ें हो सकती हैं। कोई भी छिपी हुई चीज़ जो है उसे जिन्न कहते हैं। इस लिए हदीस में बैक्टीरिया के लिए भी जिन्न का शब्द प्रयोग हुआ है और हदीस में वर्णन है यदि तुम्हें बाहर जंगल में रफ़ा हाजत के बाद सफ़ाई करनी पड़े तो यदि कोई हड्डी मिल जाए तो उसके साथ न करो क्योंकि इस में जरासीम होते हैं। छिपी हुई चीज़ें होती हैं। इस लिए उस के अतिरिक्त पत्थर प्रयोग करो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इसी तरह पहाड़ों में छिपे हुए लोगों को भी जिन्न कहते हैं। बड़े लोग जो संसार में सामने नहीं आते वे भी जिन्न हैं तो इस तरह कुछ इन्सान जिन्न इस दृष्टि से भी होते हैं कि वे आम इन्सानों से अपने आपको ज़रा ऊपर समझते हैं। तो इस तरह विभिन्न किस्म की कैटिगरीज़ हैं। ख़ुलासा यह कि प्रत्येक छिपी हुई चीज़ या अपने आपको दूसरे से अलग-अलग रखने वाले जो लोग हैं उनके लिए जिन्न का शब्द प्रयोग है।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया। जिस दिन आप हुज़ूर बने थे उस दिन आप को कैसा महसूस हो रहा था। यह तो बड़ी ज़िम्मेदारी है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तुम उस दिन की वीडियो देख लेना। तुम्हें पता लग जाएगा कई जगह एम.टी.ए. वालों ने तस्वीरें ली हुई हैं उनको कहना कि तुम्हें दिखा दें। तुम्हें मेरी शक्ल नज़र आजाएगी कि कैसा लग रहा था।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि ख़िलाफ़त से पहले हुज़ूर Riding करते थे तो क्या अब भी हुज़ूर को Riding के लिए समय मिलता है।

इसके उत्तर में हुज़ूर ने फ़रमाया:

Riding तो मैं पहले भी निरंतर नहीं करता था। हाँ जब मैं पढ़ता था तो उस समय Riding किया करता था परन्तु अब तो समय नहीं मिलता। परन्तु कभी कभी दो-चार महीने बाद इस्लामाबाद में जा कर वहां Riding करते हुए देख लेता हूँ इस्लामाबाद में जमाअत ने वहां घोड़े रखे हुए हैं वहां जामिया के लड़के Riding करने जाते हैं। बच्चे अतफ़ाल Riding करते तो कभी कभी जब अवसर मिले तो जाकर देख लेता हूँ।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि वक़्फ़ नौ का क्या अर्थ होता है?

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि वक़्फ़ नौ का अर्थ है नया वक़्फ़। अर्थात जो एक नई स्कीम बच्चों को वक़्फ़ करने की निकली है। जिसमें माँ बाप अपने बच्चों को उनकी जन्म से पहले वक़्फ़ कर देते हैं और जब बच्चा बड़ा हो जाए। होश में आजाए। फिर वह पुनः बौंड लिखे कि मैं अपने आपको वक़्फ़ करना चाहता हूँ। एक वक़्फ़ औलाद होता है। जब बच्चा पैदा हो गया। उस समय दो-चार छः वर्ष का हो गया उस समय माँ बाप की इच्छा होती है बच्चों को वक़्फ़ कर दें तो वह वक़्फ़ वक़्फ़ औलाद में शुमार होता है और यह पहले से एक स्कीम है।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि हमारी एक इस्लामी नुमाइश हुई थी इस में एक ईसाई मित्र ने हमसे पूछा था कि सूरत अल्मायदा में ख़ुदा तआला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पूछते हैं कि आपने अपनी क़ौम को यह हिदायत दी थी कि आपकी क़ौम आपकी और आपकी माँ की इबादत करें। तो ईसाई बाद में यह कहते हैं कि हम तो हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की माँ की इबादत करते ही नहीं। जब कि क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि करते हैं तो इस तरह वे साबित करना चाहते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) क़ुरआन-ए-करीम ग़लत है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। पहले तो आयत निकालो और आयत पढ़ो और अनुवाद पढ़ो और फिर प्रश्न करो। जब प्रश्न क़ुरआन शरीफ़ की एक आयत के हवाला से कर रहे हैं तो आयत पढ़के प्रश्न किया करते हैं फिर उसका अनुवाद करते हैं ताकि सही तरह आए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इबादत क्यों नहीं करते। हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर बिठाया हुआ मानते हैं। ये मानते हैं कि हज़रत ईसा आसमान पर चले गए। फिर वह कहते हैं कि तीन ख़ुदा हैं। तीन ख़ुदा मानते हैं, बाप बेटा और रूहुल-क़ुदुस। जब तीन ख़ुदा आगए तो फिर इबादत तो ख़ुदा की की जाती है। पूजा जाता है। जब मांगते हैं तो ईसा के नाम से मांगते हैं। वह ख़ुदा के लिए हाथ उठाने की बजाय इस प्रकार यूं करके उसे लगाते हैं। तो फिर यही चीज़ें इबादत हैं और क्या इबादत है? प्रत्येक चीज़ जो मांगते हैं वह कहते हैं हज़रत ईसा ने हमें दे दी। अब उनसे कहो कि अब यह बात छोड़ों अपने नज़रियात और बातें बदलते रहते हो। अब तो वेटीकन वालों ने भी यह ऐलान कर दिया था कि जो ईसा ने आना था वह कोई नहीं आना।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब ईसाइयों में भी बहुत सारे फ़िरक़े हैं जिनके विभिन्न नज़रियात हैं और फिर बहुत सारी बाइबल की ऐसे आयतें हैं जिन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एतराज़ किया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद के बाद उनको बाइबल से निकाल दिया गया। तो यह तो स्वयं ऐसी चीज़ें हैं जिससे शकूक-ओ-शुबहात पैदा होते हैं उनको शक पड़ता रहता है अब जैसा कि मैं बता रहा हूँ कि वेटीकन वालों ने कहा है कि हज़रत-ए-ईसा ने जो कहा था कि मैंने संसार में आना है। वह संसार में नहीं आना उस समय उन्होंने शराब शायद पी होगी और शराब के नशे में यह बात कह दी थी कि मैंने आना है। यह लिखा हुआ आजकल इंटरनैट भी Available है। तुम बे-शक पढ़ लो। जर्मन में भी इंग्लिश में भी प्रत्येक जगह वेटीकन वालों के पादरियों का यह वर्णनहै। अब वे कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उनको कोई और काम सपुर्द कर दिया है जिसको करने के लिए वह कुछ और कर रहे हैं। संसार की इस्लाह तो हुई नहीं किसी और संसार की इस्लाह के लिए अब ईसा को भेज दिया है। तो उनकी तो ये बातें हैं। क़ुरआन शरीफ़ जो कहता है सच्च कहता है सही कहता है। जो ये कहते हैं वह बदलते रहते हैं जिस तरह कि मैंने बताया कि बाइबल की बहुत सारी आयतें हैं जब उन पर एतराज़ करो तो जो नई नई प्रिंट करते हैं उनमें वह बदलने लग जाते हैं और फिर बाइबल भी एक दूसरे से समानता नहीं रखती। विभिन्न किस्म के वर्ज़न हैं तो उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त और माबूद बनाए हुए हैं और उनको शरीक ठहराया है।

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 10-17 जुलाई 2014 ई.)

8 जून 2014 ई. दिन ईतवार

वक्फे नौ बच्चों और बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लासेज़

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि हदीस में आता है कि जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है। यह जन्नत प्रत्येक माँ के क़दमों के नीचे है या केवल मुस्लमान माओं के क़दमों के नीचे है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए फ़रमाया जन्नत माँ के क़दमों के नीचे से मुराद यह है कि माँ यदि अच्छी तर्बीयत करती है और बच्चा नेक होता है। नेक काम करता है। अल्लाह तआला की इबादत करता है तो वह बच्चा नेक कामों के कारण से जन्नत में जाएगा। और यदि कोई भी

माँ हो, वह यदि अपने बच्चे की तर्बीयत ऐसे कर दे कि ख़ुदा को पहचानने वाले हों और इस तलाश में हों कि अल्लाह तआला के जो आदेश हैं उनको हम मानें तो वह जन्नत में ले जाने वाली है। अब हज़रत-ए-मूसा ने भी अपने बाद आने वाले नबी की ख़बरें दीं। हज़रत-ए-ईसा ने भी ख़बर दी तो ये सब जो पुराने नबी हैं उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने की ख़बर दी। यदि वह उनको नहीं मानते तो वह मोमिन नहीं हो सकते। अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में कहा है कि जो ईसाई है यहूदी है मजूसी वह बख़्शा जाएगा। अर्थात वह मोमिन हो तो जन्नत में जाएगा। इस का अर्थ यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि वेह लोग अपनी इस नेकी की कारण आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बैअत में आजाऐंगे उनको मान लेंगे और फिर अल्लाह तआला से बदला पाएँगे। बाक़ी जन्नत या दोज़ख़ का फ़ैसला करना यह अल्लाह तआला का काम है। यह इन्सानों का काम नहीं। इस से मुराद यही है कि एक मोमिन महिला मुस्लिम महिला यदि अपने बच्चे की नेक तर्बीयत करती है उसको अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों पर चलने वाला बनाती है अल्लाह तआला की इबादत करने वाला बनाती है। और नेक काम करने वाला बचा है नेकियों को फैलाने वाला बचा है तो वह जन्नत में जाएगा। बाक़ी यह कहना कि दूसरी माएं जो मुस्लमान नहीं हैं वह अपने बच्चों की तर्बीयत भी करें तो जन्नत में नहीं जाएँगी ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि बहुत सारे उच्च आचरण हैं और अल्लाह तआला तो बख़शने वाला है किसी को भी किसी नेकी के ऊपर जन्नत में भेज सकता है। दो आदमियों की बेहस हो गई। एक ने कहा कि तुम ऐसे-ऐसे बुरे काम करते हो तुम जन्नत में नहीं जा सकते। मैं देखो कितने नेक काम करता हूँ, मैं इबादत करता हूँ और मेरा बड़ा ऊंचा स्थान है। ख़ैर मरने के बाद दोनों अल्लाह के हुज़ूर प्रस्तुत हुए तो अल्लाह तआला ने कहा तुम कौन होते हो जन्नत या दोज़ख़ का फ़ैसला करने वाले। मैं हूँ जिसने जन्नत और दोज़ख़ में डालना है। जिसको तुम कहते हो कि तुम जन्नत में नहीं जाओगे तुम दोज़ख़ में जाओगे। इस में जन्नत में भेज रहा हूँ और तुमको जो तकब्बुर पैदा हो गया था कि मैं बड़ा ही इबादतगुज़ार हूँ, नेक काम करता हूँ तुम्हें दोज़ख़ में डालता हूँ। यह फ़ैसले अल्लाह ने करने हैं बाक़ी इस से मुराद यह है कि यदि माँ अच्छी नेक तर्बीयत करती है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ऐसी मुस्लमान मोमिन माँ के बच्चे जो हैं वह इन शा अल्लाह तआला जन्नत में जाने वाले होंगे उन नेक कामों के कारण से जो वह अच्छी तर्बीयत के कारण से करेंगे।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि जमाअत की ओर से जो कैलेंडर मिलते हैं उन पर आयात लिखी होती हैं या खलिफ़ा की तसावीर बनी होती हैं। जब वर्ष गुज़र जाता है तो उसके साथ क्या करना चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इस को यदि स्टोर नहीं कर सकते तो जला दिया करो या Shred कर दिया करो। यहां श्रेडर मिलते हैं उनमें डाल दो। हर घर में तो श्रेडर नहीं होता इस लिए तुम जला दिया करो।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि जमाअत अहमदिया का जो नाम है यह किस ने रखा है और कैसे रखा गया?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ही रखा है और 1901 में जब मर्दुम-शुमारी हुई। यहां जर्मन में मर्दुम-शुमारी को Volkszahlung कहते हैं। मर्दुम-शुमारी हुकूमत करती है कि हमारी जनसंख्या देश की कितनी है। कितने पुरुष हैं, कितनी महिलाए हैं, कितने बच्चे हैं। किस-किस धर्म के लोग रहने वाले हैं। प्रत्येक दस वर्ष के बाद करते हैं। तो इंडिया में 1901 ई. में जो मर्दुम-शुमारी हुई थी इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत के लोग को कहा कि हमें दूसरे मुस्लमानों से अलग करने के लिए अलग अलग रखने के लिए यह बताने के लिए कि हम अहमदी हैं, अहमदी मुस्लमान हैं , जिन्हों ने मसीह मौऊद को माना है तो तुम अपने साथ अहमदी मुस्लमान लिखना। इस मर्दुम-शुमारी के जब फ़ार्म आए तो इस में अहमदी मुस्लमान लिखना ताकि पता लग जाए कि हम अहमदी हैं और मुल्क को भी पता लग जाए कि हमारी कितनी संख्या है? इस लिए अहमदी नाम रखा गया और उस समय से रखा गया।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि पुराने ज़माने में लोगों को पता कैसे चलता था कि में एक नबी हूँ? इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया नए ज़माने में किस तरह पता लगता है?

किसी टेलीविज़न पर अनाउन्स्मेंट होती है। ऐसा कदापि नहीं है। प्रश्न यह है कि जिस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इत्तिबा में आपकी भविष्यवाणियों के अनुसार मसीह मौऊद और महदी मौऊद पधारे जिन को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नबी उल्लाह का नाम दिया। और वह नबी थे तो इस ज़माने में भी कोई टेलीविज़न या रेडियो या कहीं और अनाउन्स्मेंट तो नहीं हुईं। प्रैस उस समय जारी हो गए थे परन्तु आपने बताया कि अल्लाह तआला ने मुझे कहा कि मैं नबी हूँ फिर आहिस्ता-आहिस्ता संसार को पता लगना शुरू आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में तो प्रैस इत्यादि नहीं थे। फिर इसी लिए आपने संसार के विभिन्न जो बादशाह थे उनको तब्लीग़ के ख़त लिखे कि तुम्हारी विभिन्न धर्मों के नबियों की भविष्यवाणियों के अनुसार जो नबी आख़िरी शरीयत ले के आने वाला था वह आ गया है और वह मैं हूँ। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने विभिन्न बादशाहों को ख़त लिखे तो इस तरह उन बादशाहों तक संदेश पहुंचा। फिर जो मुस्लमान थे सहाबा थे वह विभिन्न जगहों पर गए और जब तब्लीग़ की तो बताया कि नबी आ गया है । कुछ लोग यह कहते हैं कि जंगों के माध्यम से इस्लाम फैल गया। जंगों से नहीं फैला। अब चीन के साथ अरबों की कोई जंग नहीं हुई। परन्तु चीन में भी करोड़ों मुस्लमान हैं। इस ज़माने में सहाबा वहां गए थे जिन्हों ने वहां तब्लीग़ की और चीनी मुस्लमान हो गए। इसी तरह संसार की विभिन्न जगहों पर मुस्लमान हुए। तो इस तरह तब्लीग़ करके यह संदेश पहुंचाया कि जिस नबी ने आना था वह और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सारे संसार के लिए नबी थे। अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया कि ऐलान कर दो कि मैं समस्त दुनिया के इन्सानों के लिए नबी हूँ। इसलिए आपने सारे संसार को संदेश भेजा और आपका संदेश संसार में पहुंचा। पहले जो नबी आते थे वह अपने अपने क्षेत्रों के लिए होते थे। थोड़े-थोड़े क्षेत्रों के लिए होते थे। उदाहरण के लिए किसी की क़ौम एक लाख है किसी की दो लाख या किसी का थोड़ा सा इलाका है। इन क्षेत्रों में वह नबी थे। एक समय में दो दो नबी भी होते थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी नबी थे, साथ दूसरा क्षेत्र था जहां संदेश देने वाले हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम के लिए संदेश लेकर पहुंचे। हज़रत लूत अलैहिस्सलाम भी नबी थे। तो छोटे छोटे क्षेत्रों में थे वह अपने क्षेत्रों में लोगों को बताया करते थे कि हम नबी हैं अल्लाह तआला ने हमें ये संदेश देकर भेजा है।

एक वक्फे नौ तालिब इलम ने प्रश्न किया कि पहले तो जर्मनी में जामिया नहीं था लंदन में था तो अब जर्मनी में भी बन गया है तो अब यदि कोई लंदन जामिया में जाना चाहे तो क्या वह जा सकता है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बड़ी अच्छी बात है तुम आना चाहो मैं तुम्हें बुलाऊंगा। यदि तुम यहां जर्मनी से लंदन आके जामिया में पढ़ना चाहते हो तो तुम्हें आज्ञा है बशर्तिके उनके पास हूँ।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि शिर्क का अर्थ क्या है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि शिर्क का अर्थ यह है कि शरीक ठहराना। अल्लाह तआला के बराबर किसी को ले के आना। उदाहरण के लिए अब तुम यह कहो कि मैं वहां जाऊंगा और अमुक व्यक्ति मेरी आवश्यकता पूरी कर सकता है जो मुझे पैसे दे सकता है। और तुम अल्लाह तआला को भूल जाते हो तो इस का अर्थ है तुमने शिर्क किया। हमेशा कहो कि अमुक जगह जाऊंगा तो इन शा अल्लाह तआला मैं उसे वसूल कर लूंगा। इस लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि कोई काम करने से पहले तुम इन शा अल्लाह कहा करो। जब इन शा अल्लाह कहा करोगे तो इस का अर्थ है कि जो अल्लाह चाहे तो यह काम अल्लाह तआला कर देगा। यह काम हो जाएगा। तो इस तरह तुम्हारे बचपन से ही तुम्हारे ज़हन में शिर्क के विरुद्ध बात आनी चाहिए कि छोटी छोटी बातों में भी तुमने अल्लाह तआला को पहले रखना है। इंशा-ए-अल्लाह कहो फिर काम करो कि इन शा अल्लाह में यह काम करलूंगा। अल्लाह चाहेगा तो मैं काम कर लूंगा किसी दूसरे में ताक़त नहीं है कि वह मेरे काम कर सके। फिर कुछ लोग जो बुतों को पूजते हैं और बुत सामने रखे होते हैं उनसे जाके मांगते हैं। वह भी शिर्क है। हालाँकि माँगना केवल अल्लाह से चाहिए किसी को अल्लाह के मुक़ाबले पर लाकर खड़ा करना या अल्लाह के बराबर समझना शिर्क है।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि मैंने तीन शेअर नज़्म के सुनाने थे मैंने अपनी अम्मी से वादा किया था कि मैं आके सुनाऊंगा।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि केवल दो शेअर सुना दो। इस लिए उस तिफ़्ल ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मंजूम कलाम "हमदो सना उसी को जो ज़ात जा वेदानी" ..... से दो शेअर सुनाए।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि जो लोग रमज़ान में एतेकाफ़ बैठते हैं वह क्यों बैठते हैं। वैसे तो दूसरे लोग भी क़ुरआन पढ़ते हैं और मुकम्मल करते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि एतेकाफ़ बैठना ज़रूरी तो नहीं होता। तुम्हारी मर्ज़ी है बैठो न बैठो। इस लिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह सुन्नत थी। आप रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में मस्जिद नब्वी में एतेकाफ़ बैठा करते

शेष पृष्ठ 12 पर

पृष्ठ 2 का शेष

अपने साथियों की रिहाई का मुतालिबा किया लेकिन हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके मुंतशिर होने तक क़ैदियों को रिहा करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा इस तरह नहीं, तुम लोग चले जाओ फिर मैं देखूँगा। जब ये लोग मुंतशिर नहीं हुए तो हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन पर हमला कर के उनके बहुत से आदमियों को क़तल कर दिया और कुछ लोग वहां से फ़रार हो गए। हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वापस आकर उनके क़ैदी भी रिहा कर दिए परन्तु उन लोगों ने वापस जा कर जंग की तैयारी शुरू कर दी। इसलिए बनू अम्र, बनू हारिस और अशअत बिन केस और सिमत बिन असवद अपने अपने मोर्चों में चले गए और उन्होंने ज़कात देने से इन्कार कर दिया और इर्तेदाद इख़तेयार कर लिया जिस पर हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़ौज जमा कर के बनू अम्र पर हमला कर दिया और उनके बहुत से आदमी क़तल हुए और जो भाग सकते थे वे भाग गए और एक बड़ी संख्या को हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ैद कर के मदीना रवाना कर दिया। रास्ते में अशअत और बनू हारिस के लोगों ने हमला कर के मुस्लमानों से अपने क़ैदी छुड़वा लिए। इस वाक़िया के बाद अतराफ़ के कई क़बाइल भी उन लोगों के साथ मिल गए और उन्होंने भी इर्तेदाद का ऐलान कर दिया। इस पर हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदद के लिए हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ ख़त लिखा। हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना नायब बनाया और ख़ुद अपने साथियों को लेकर किन्दा पर हमला-आवर हुए। किन्दा के लोग भाग कर नुजेर नामी अपने एक क़िला में महसूर हो गए। यह भी यमन का एक क़िला था हज़र मौत के क़रीब। इस क़िला के तीन रास्ते थे। एक रास्ते पर हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु उतर गए। दूसरे पर हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने डेरा डाल लिया और तीसरा रास्ता किन्दा ही के तसर्रुफ़ में रहा यहां तक कि हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु पहुंचे और इस रास्ते पर क़ाबिज़ हो गए। हज़रत ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर पाँच हज़ार मुहाजेरीन और अंसार सहाबा और अन्त्य क़बायल पर मुश्तमिल था। जब क़िला नुजीर के कैदियों ने देखा कि मुस्लमानों को बराबर इमदाद पहुंच रही है तो उन पर दहश्त तारी हो गई। इस वजह से उनका सरदार अशअत फ़ौरन हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंच कर अमान का तालिब हुआ। हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु अशअत को लेकर हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। अशअत ने अपने लिए और अपने साथ नौ अफ़राद के लिए इस शर्त पर अमान तलब की कि वे मुस्लमानों के लिए क़िला का दरवाज़ा खोल देंगे। हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह शर्त स्वीकार कर ली। जब अशअत ने नौ अफ़राद के नाम लिखे तो जल्द-बाज़ी और दहश्त की वजह से अपना नाम लिखना भूल गया। फिर हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तहरीर लेकर गया जिस पर उन्होंने मौहर लगा दी। फिर अशअत वापस चला गया। जब उसने क़िला का दरवाज़ा खोल दिया तो मुस्लमान इस में दाख़िल हो गए। फ़रीक़ैन की लड़ाई में सात सौ कुंदी क़तल कर दिए गए। क़िला वालों ने भी आगे से मुक़ाबला किया और लड़ाई की। बहरहाल उनके आदमी क़तल किए और एक हज़ार औरतों को क़ैद कर लिया गया। इसके बाद हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमान नामा मंगवाया और इस में दर्ज तमाम लोगों को माफ़ कर दिया मगर इस में अशअत का नाम नहीं था। इस पर हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके क़तल का इरादा कर लिया परन्तु हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु की दरख़ास्त पर उसे बाक़ी क़ैदियों के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में रवाना कर दिया कि इस के बारे में भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ही फ़ैसला फ़रमाएं। जब मुस्लमान फ़तह की ख़बर और क़ैदियों के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने अशअत को तलब किया और फ़रमाया तुम बनू वली के धोखे में आ गए और वे ऐसे नहीं कि तुम उन्हें धोखा दे सको और वे भी तुम्हें इस काम का अहल नहीं समझते थे। वे ख़ुद हलाक हुए और तुम्हें भी हलाक किया क्या तुम इस बात से नहीं डरते कि तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बददुआ का एक हिस्सा पहुंचा। दरअसल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किन क़बीले के चार सरदारोँ पर लानत की थी जिन्हों ने अशअत के साथ इस्लाम क़बूल किया था फिर मुर्तद हो गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम्हारा क्या ख़्याल है कि मैं तुम्हारे साथ क्या सुलूक करूँगा? अशअत ने कहा मुझे आपकी राय का इलम नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मेरे ख़्याल मैं तुम्हें क़तल कर देना चाहिए। उसने कहा मैं वह हूँ जिसने अपनी क़ौम के दस आदमियों की जान बख़शी का तसफ़ीया कराया है। मेरा क़तल कैसे जायज़ हो सकता है? आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि क्या मुस्लमानों ने मामला तुम्हारे सपुर्द किया था? उसने कहा जी हाँ। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया: जब उन्होंने मामला तुम्हारे सपुर्द किया और फिर तुम उनके पास आए तो क्या उन्होंने इस पर मौहर सब्त की थी। उसने कहा जी हाँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तहरीर पर मौहर सब्त होने के बाद सुलह उसके मुताबिक़ वाजिब हो गई जो इस में तहरीर था। इस से पहले तुम सिर्फ मुसालहत की गुफ़्तगु कर रहे थे। जब अशअत डरा कि वह मारा जाएगा तो उसने अर्ज़ किया कि अगर आप मुझ से किसी भलाई की तवक़्क़ो रखते हैं तो उन क़ैदियों को आज़ाद कर दीजीए और मेरी लग़्ज़िशें माफ़ फ़रमाईए और मेरा इस्लाम क़बूल कर लीजीए और मेरे साथ वही सुलूक रवा रखीए जो मुझ जैसों के साथ आप किया करते हैं और मेरी बीवी मेरे पास वापस लौटा दीजीए। लिखा है कि इस वाक़िया से क़बल एक मर्तबा अशअत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ था। उसने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन उम्मे फरवा बिंत-ए-अबू कहाफ़ा को पैग़ाम-ए-निकाह दिया था। हज़रत अबू क़हाफ़ा ने अपनी लड़की उस की ज़ौजीयत में दे दी थी और रुख़्सती को अशअत की दुबारा आमद पर उठा रखा था कि दुबारा आएगा तो रुख़्सती हो जाएगी। एक मुसन्निफ़ ने उम्मे फरवा को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की साहबज़ादी भी क़रार दिया है।

बहरहाल फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए और अशअत मुर्तद और बाग़ी हो गया। इसलिए उसे अंदेशा हुआ कि उसकी बीवी उसके हवाले नहीं की जाएगी। अशअत ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे अल्लाह के दीन के लिए अपने इलाक़े के बेहतरीन लोगों में पाएँगे। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस की जान बख़श दी और इस का इस्लाम क़बूल कर लिया और उसके घर वाले उसके सपुर्द कर दिए। तथा फ़रमाया जाओ और मुझे तुम्हारे सम्बन्ध में ख़ैर की ख़बरें पहुंचें।

इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने समस्त क़ैदियों को भी आज़ाद कर दिया और वे सब अपने अपने इलाक़ों में चले गए।

(उद्धरित अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 300 से 304 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(हज़रत सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 240-241बुक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)(جمهرة انساب العرب, पृष्ठ 425 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2007 ई.)(सय्यदना अबू बकर अल् सिद्दीक़ अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 537-538 अल् फ़ुर्कान ट्रस्ट ख़ानगढ़)(मोअज्जमुल बुल्दान ,भाग 1 पृष्ठ 109)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 5, पृष्ठ 315)(मस्नद अहमद बिन हनबल, मस्नद अम्र बिन अब्सा, भाग 6 पृष्ठ 575-576 रिवायत नंबर 19675 आलेमुल क़ुतुब 1998 ई.) (अल् तब्कातुल कुबरा लुबनान, भाग 5 पृष्ठ 8-9 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

एक रिवायत के अनुसार अपनी क़ौम से वादा तौड़ने के कारण अशअत अपने क़बीले में वापस जाने का साहस नहीं कर सका और क़ैद से छूटने के बाद उम्मे फरवः के साथ मदीना में क़ियाम पज़ीर रहा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में जब इराक़ और शाम की जंगें पेश आएं तो वे भी इस्लामी फ़ौजों के हमराह ईरानियों और रोमीयों से जंग करने के लिए बाहर निकला और कारहाए नुमायां अंजाम दिए जिसकी वजह से लोगों की नज़र में इस का वक़ार फिर बुलंद हो गया और इस की खोई हुई इज़्ज़त फिर वापस मिल गई। उल-ग़र्ज़ जब तक पूरी तरह अमन-ओ-अमान क़ायम नहीं हो गया और इस्लामी हुकूमत की बुनियादें मुस्तहकम नहीं हो गईं हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अकरमा रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त तक हज़र मौत और किनदा में ही मुक़ीम रहे।

मुर्तद बाग़ीयों के साथ ये आख़िरी जंगें थीं। उनके बाद अरब से बग़ावत का मुकम्मल तौर पर ख़ातमा हो गया और तमाम क़बायल हुकूमत इस्लामीया के अधीन आ गए।

हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस इलाक़े में अमन-ओ-अमान क़ायम रखने और बग़ावत और सरकशी के अस्बाब के मुकम्मल तौर पर नष्ट करने के लिए इसी सख़्ती से काम लिया जिससे वह यमन में काम ले चुके थे।

(हज़रत सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन पृष्ठ 241 बुक कॉर्नर शो-रूम जेहलम)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन और हज़र में से किसी एक इलाक़े को इख़तेयार करने के बारे में लिखा तो उन्होंने यमन को इख़तेयार कर लिया। इस तरह यमन पर दो अमीर निर्धारित हुए।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुर्तद होने वाले और बाग़ीयों के ख़िलाफ़ काम करने वाले उम्माल को तहरीर फ़रमाया : इसके बाद! मेरे नज़दीक ज़्यादा पसंदीदा अमर यह है कि आप लोग हुकूमत में सिर्फ उन्ही अश्ख़ास को शरीक करें जिनका दामन इर्तेदाद और बग़ावत के दाग़ से पाक रहा हो। बेशक वे वापस आ गए हैं लेकिन यह देखो उनमें वे शामिल तो नहीं जो पहले इर्तेदाद इख़तेयार कर चुके हैं या बग़ावत कर चुके हैं। फिर फ़रमाया कि आप सब उसी पर अमल करें और इसी पर कारबन्द रहें। फ़ौज में जो लोग वापसी के ख़ाहां हूँ उनको वापसी की इजाज़त दे दो और दुश्मन से जिहाद करने में किसी मुर्तद बाग़ी से हरगिज़ मदद न लो।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 305 प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

अक्सर मुसन्निफ़ीन और खासतौर पर इस ज़माने के सीरत निगार उमूमन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की इन जंगों का वर्णन करते हुए वर्णन करते हैं कि गोया जिन लोगों ने नबुव्वत का झूठा दावा किया था उनके ख़िलाफ़ ये सारा जिहाद किया गया और तलवार के ज़ोर से उनका अंत किया गया क्योंकि यही उनकी शरई सज़ा थी लेकिन तारीख़ और जीवनी का अध्यन करने वाला हरगिज़ इस बात का समर्थन नहीं कर सकता। जैसा कि क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक तर्ज़-ए-अमल और अहादीस मुबारका की रोशनी में पहले वर्णन हो चुका है कि न तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी केवल नबुव्वत का दावा करने पर कोई कार्रवाई फ़रमाई और न ही हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ये जंगी मुहिम्मात केवल इस वजह से थीं कि झूठी नबुव्वत का दावा करने वाले का अंत किया जाता बल्कि असल सोच उन लोगों की उपद्रवी कार्य थे।

इसलिए इस बात की वज़ाहत करते हुए कि नबुव्वत के दावा करने वालों से सहाबा ने क्यों जंगें कीं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया है कि मौलाना मौदूदी साहिब का यह लिखना कि सहाबा ने हर उस शख़्स के ख़िलाफ़ जंग की जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद नबुव्वत का दावा किया सहाबा के कथनों के ख़िलाफ़ है।

मौलाना मौदूदी साहिब को याद रखना चाहिए। (इस वक़्त उनकी ज़िंदगी की बात है) कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जिन लोगों ने दावा नबुव्वत किया और जिनसे सहाबा ने जंग की वे सब के सब ऐसे थे जिन्हों ने इस्लामी हुकूमत से बग़ावत की थी और इस्लामी हुकूमत के ख़िलाफ़ आलान-ए-जंग किया था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मौलाना को इस्लामी लिटरेचर के मुताला का बहुत बड़ा दावा है। काश वे इस अमर के सम्बन्ध में राय ज़ाहिर करने से पहले इस्लामी तारीख़ पढ़ कर देख लेते तो उन्हें मालूम हो जाता कि मुसैलमा कज़्ज़अब, असवद अनसी, सज्जः बिंत हारिस और तुलेहा बिन ख़ूवैलद असदी ये सब के सब ऐसे लोग थे जिन्हों ने मदीना की हुकूमत की इत्तिबा से इन्कार कर दिया था और अपने अपने इलाक़ों में अपनी हुकूमतों का ऐलान कर दिया था।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि तारीख़ इब्न-ए-ख़ुलदून को अगर ग़ौर से पढ़ते तो यह वाज़िह हो जाता कि मौलाना साहिब का जो नज़रिया है वह ग़लत है। इसलिए वहां लिखा है कि तमाम अरब ख़ाह वे आम हों या ख़ास हों उनके इर्तेदाद की ख़बरें मदीना में पहुंचीं। केवल क़ुरैश और सक़ीफ़ दो क़बीले थे जो इर्तेदाद से बच्चे और मुसैलमा का मुआमला बहुत क़ुव्वत पकड़ गया और तैय और असद क़ौम ने तुलेहा बिन खुवेलद की इताअत क़बूल कर ली और ग़तफ़ान ने भी इर्तिदाद क़बूल कर ली और हवाज़िन ने भी ज़कात रोक ली और बनी सुलेम के बड़े लोगों भी मुर्तद हो गए और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़र्रर करदा उमरा यमन और यमामहावर बनी असद और दूसरे हर इलाक़ा और शहर से वापस लौटे और उन्होंने कहा कि अरबों के बड़ों ने भी और छोटों ने भी सब के सबने इताअत से इन्कार कर दिया है। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इंतेज़ार किया कि उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु वापस आए तो फिर उनके साथ जंग की जाए लेकिन अबस और ज़ुबयान के क़बीलों ने जल्दी की और मदीना के पास अबस मुक़ाम पर आकर डेरे डाल दिए और कुछ और लोगों ने ज़ुल क़स्सह में आकर डेरे डाल दिए। उनके साथ बनी असद के मुहाहिद भी थे और बनी किनानह में से भी कुछ लोग उनसे मिल गए थे। इन सबने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ वफ़द भेजा और मुतालबा किया कि नमाज़ तक तो हम आपकी बात मानने के लिए तैयार हैं। मदीना के इर्द-गिर्द जमा हो गए और ये बात की कि नमाज़ तक तो बात मानने के लिए तैयार हैं लेकिन ज़कात अदा करने के लिए हम तैयार नहीं लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी इस बात को रद्द कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद अन्हु लखते हैं इस हवाला से ज़ाहिर है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिन लोगों से लड़ाई की थी वह हुकूमत के बाग़ी थे। उन्होंने टैक्स देने से इन्कार कर दिया था और उन्होंने मदीना पर हमला कर दिया था।

मदीना के इर्द-गिर्द जमा हो गए थे कि अगर यहां बात न मानी तो हम हमला करेंगे। मुसैलमा ने तो ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को लिखा था कि मुझे हुक्म दिया गया है कि आधा मुल्क अरब का हमारे लिए है और आधा मुल्क क़ुरैश के लिए है। और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद उसने हिज्र और यमामा में से उनके मुक़र्रर करदा वाली सुमामह बिन आसाल को निकाल दिया और ख़ुद इस इलाक़ा का वाली बन गया था। और उसने मुस्लमानों पर हमला कर दिया। इसी तरह मदीना के दो सहाबा हबीब बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु और अब्दुल्लाह बिन वहाब रज़ियल्लाहु अन्हु को उसने क़ैद कर लिया और उनसे ज़ोर के साथ अपनी नबुव्वत मनवानी चाही। जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है कि अब्दुल्लाह बिन वह्ब ने तो डर कर उसकी बात मान ली परन्तु हबीब बिन ज़ैद ने उस की बात मानने से इन्कार कर दिया। इस पर मुसैलमा ने उनका अंग अंग काट कर आग में जला दिया। इसी तरह यमन में भी जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अफ़्सर मुक़र्रर थे उनमें से कुछ को क़ैद कर लिया और कुछ को सख़्त सज़ाएं दी गईं। इसी तरह तिब्री ने लिखा है कि अस्वद अनसी ने भी बग़ावत का झंडा बुलंद किया था और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जो हुक्काम मुक़र्रर थे उनको उसने तंग किया था और उनसे ज़कात छीन लेने का हुक्म दिया था। फिर उसने सना में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़र्रर करदा हाकिम शहर बिन बाज़ान पर हमला कर दिया। बहुत से मुस्लमानों को क़तल किया, लूटमारमार की, गवर्नर को क़तल कर दिया और उसको क़तल कर देने के बाद उस की मुस्लमान बीवी से जबरन निकाह कर लिया। बनू नजरान ने भी बग़ावत की और वे भी अस्वद अनसी के साथ मिल गए और उन्होंने दो सहाबा अम्र बिन हज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को इलाक़ा से निकाल दिया।

इन वाक़ियात से ज़ाहिर है कि नबुव्वत का दावा करने वालों का मुक़ाबला इस वजह से नहीं किया गया था कि वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से नबी होने के दावेदार थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन की इशाअत के मुद्दई थे बल्कि सहाबा ने उनसे इसलिए जंग की थी कि वे शरीअत-ए-इस्लामिया को मंसूख़ करके अपने क़ानून जारी करते थे और अपने इलाक़ा की हुकूमत के दावेदार थे और केवल इलाक़ा की हुकूमत के दावेदार ही नहीं थे बल्कि उन्होंने सहाबा को क़तल किया, इस्लामी मुल्कों पर चढ़ाईयां कीं, क़ायम शूदा हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत की और अपनी आज़ादी का ऐलान किया। इन वाक़ियात के होते हुए आप रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं कि मौलाना मौदूदी साहिब का

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

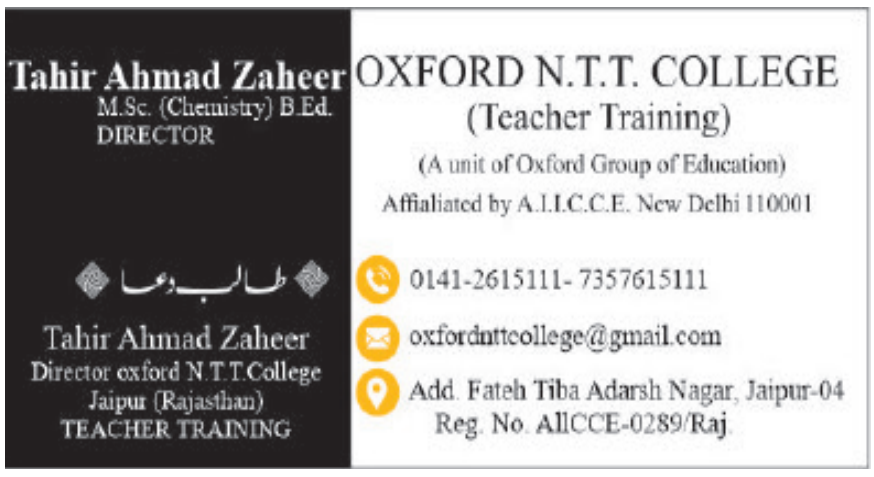

यह कहना कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तमाम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबुव्वत का दावा करने वालों का मुक़ाबला किया, यह झूठ नहीं तो और क्या है? अगर कोई शख़्स यह कह दे कि सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु इन्सानों के क़तल को जायज़ क़रार देते थे तो क्या यह केवल इस वजह से ठीक हो जाएगा कि मुसैलमा कज़्ज़ाब भी इन्सान था और अस्वद अनसी भी इन्सान था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जो लोग तोड़-मरोड़ कर इस्लाम की तारीख़ पेश करते हैं वे इस्लाम की ख़िदमत नहीं कर रहे। अगर उनके मद्द-ए-नज़र इस्लाम की ख़िदमत है तो वे सच्च को सबसे बड़ा मुक़ाम दें और ग़लतबयानी और वाक़ियात को तोड़-मरोड़ कर पेश करने से कुल्ली तौर पर बचा करें।

(उद्धरित मौलाना मौदूदी साहिब का रसाला "क़ादियानी मसला का जवाब", अनवारुल ऊलूम, भाग 24 पृष्ठ 11 से 14)

बहरहाल सरज़मीन अरब से इन सब के ख़त्म होने की वजह से बग़ावतों का मुकम्मल ख़ातमा हो गया। एक तारीख़ निगार ने लिखा है कि अब अरब की तमाम बग़ावतों का ख़ातमा हो चुका था और तमाम मुर्तद होने वाले की सरकूबी की जा चुकी थी।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस मुल्क गीर फ़िल्ला का जिस मंसूबा बंदी और सुरात के साथ अंत किया वह आपकी आला सलाहीयतों का आईना दार है और साफ़ नज़र आता है कि किस तरह क़दम-क़दम पर आपको इलाही ताईद-ओ-नुसरत हासिल थी।

एक साल से भी कम मुद्दत में फ़ितन-ए-इर्तिदाद और बग़ावत पर क़ाबू पा लेना, सरज़मीन अरब पर इस्लाम की हाकिमीयत को दुबारा क़ायम कर देना एक हैरत-अंगेज़ कारनामा है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को इस्लाम के ग़लबा से बेहद ख़ुशी थी लेकिन इस मुसर्रत में ग़रूर और तकब्बुर का नाम तक नहीं था क्योंकि वे जानते थे कि यह जो कुछ हुआ केवल अल्लाह के फ़ज़ल और इस की मेहरबानी से हुआ। उनकी यह ताक़त नहीं थी कि वह मुट्ठी भर मुस्लमानों के ज़रीया से सारे अरब के मुर्तद होने वाले की जर्रार फ़ौजों का मुक़ाबला करके उन्हें शिकस्त देकर इस्लाम का इल्म निहायत शान-ओ-शौकत से दुबारा बुलंद कर सकते। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने अब यह मसला था कि वहदत-ए-दीनी को तक़वियत देने और इस्लाम को बुलंदी तक पहुंचाने के लिए क्या-क्या इक़दामात किए जाएं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सियासत का महवर केवल और केवल इस्लाम का रौब था और यही ख़ाहिश हर क्षण उनके दिल-ओ-दिमाग़ में रहती थी।

(हज़रत सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन पृष्ठ 243-244 अनुवादक अंजुम सुलतान शहबाज़, बुक कॉर्नर शोरूम जेहलम)

हर समय कि मुर्तद बाग़ीयों का अंत करने के बाद हर शख़्स को यह यक़ीन हो गया था कि अब ख़लीफ़ा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने कोई फ़िल्ला करने वाला जम नहीं सकता लेकिन आम लोगों की तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु किसी ख़ुश-फ़हमी का शिकार नहीं थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु जानते थे कि बैरूनी ताक़तें इर्तिदाद और बग़ावत के फ़िल्ला ख़ाबीदा को फिर से बेदार करके बदअमनी फैलाने का मूजिब बन सकती हैं। यह फ़िल्ला आरिज़ी तौर पर न सो गया हो। बैरूनी ताक़तें जो मुख़ालिफ़ हैं इस्लाम की वे बड़ी बड़ी हुकूमतें थीं, वे अरब की सरहदों पर दुबारा बदअमनी फैला सकती हैं इसलिए वे किसी ख़ुश-फ़हमी में मुबतला नहीं थे। अरब क़बायल की इस मुतवक़्क़े शोरिश अंगेज़ी से बचने के लिए मुनासिब समझा गया कि अरब क़बायल की तवज्जा ईरान और शाम की तरफ़ फेरी की जाए ताकि उन्हें हुकूमत के ख़िलाफ़ फ़साद बरपा करने का अवसर न मिल सके और इस तरह मुस्लमानों को इतमेंनान नसीब हो और वे दिलजमई से अहकाम दीन पर अमल पैरा हो सकें। (सय्यदना सिद्दीक़ अकबर अज़ हकीम ग़ुलाम नबी एम.ए, पृष्ठ 178)

इसलिए अरब की सरहदों के दिफ़ा और इस्लामी रियासत को अपने मज़बूत हरीफ़ों से महफ़ूज़ रखने के लिए ज़रूरी हो गया था कि इन ताक़तवर क़ौमों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाया जाए ताकि यह कौमें इस्लाम के आलमगीर पैग़ाम को तस्लीम करके या समझ कर ख़ुद भी अमन-ओ-सलामती के साथ अपनी ज़िंदगीयां बसर करें और दूसरे भी उनकी चीरा दस्तियों से महफ़ूज़ और मामून हो कर अमन और सलामती के साथ आज़ादाना तौर पर अपने अपने दीन और मज़हब पर कारबन्द हो सकें। बहरहाल इसके लिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क्या तरीक़ और हिक्मत-ए-अमली इख़्तेयार की। इस बारे में तारीख़ की कुतुब में लिखा है कि मुर्तद बाग़ीयों की जंगों और मुहिम्मात के ख़त्म होने के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु आइंदा के इक़दामात के सम्बन्ध में ग़ौर-ओ-फ़िक्र में मशग़ूल थे कि अरब और इस्लाम की देरीना दुश्मन ईरान और रुम की सल्तनतों से मुस्तक़िल तौर पर महफ़ूज़ रहने के लिए किया लाहे अमल इख़्तेयार किया जाए। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हयात-ए-मुबारका में भी ये दोनों ताक़तें अरब को अपने ज़ेरे नगीं रखना चाहती थीं और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और बहुत से इलाक़ों और क़बायल में इर्तिदाद और बग़ावत की आग ने रियासत-ए-मदीना को अपनी लपेट में ले लिया तो कुछ जगहों पर उसके पीछे एक हाथ इन्ही ताक़तों का भी था और इस अवसर को ग़नीमत जानते हुए हरकल की फ़ौजें शाम में और ईरान की फ़ौजें इराक़ में जमा होने लगीं। इसलिए मुम्किन ही नहीं था कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद-ए-मुबारक की तामील में सबसे पहले रोमीयों के ख़िलाफ़ पहला लश्कर हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत में भेज चुके थे वे इन ग़ासिब और जाबिर ताक़तों से बे-ख़ौफ़ हो कर बेफ़िकर रह सकते लेकिन क़बल इस के कि आप अभी कोई लाहे अमल सब के सामने रखते, आपको ख़बर मिली कि हज़रत मुसन्ना बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने बहरीन में मुर्तद बाग़ियों की बग़ावत को ख़त्म करने में मदद की थी उन्होंने अपने साथियों को साथ लिया और ख़लीज-ए-फारिस के किनारे के साथ साथ उत्तर की जानिब इराक़ की तरफ़ पेशक़दमी शुरू कर दी।

आख़िर वे इन अरबी क़बायल में जा पहुंचे जो दजला और फ़ुरात के डेल्टाई इलाक़ों में आबाद थे। हज़रत मुसन्ना बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु बहरीन के एक क़बीला बकर बिन वायल से ताल्लुक़ रखते थे। बहरीन का इलाक़ा यमामा और ख़लीज-ए-फारिस के दरमयान वाक़्य था और इस में मौजूदा क़तर और इमारत बहरीन के जज़ीरे भी शामिल थे। इसकी दारुल हकूमत दरी था। बहरहाल हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु बिन हारिसा हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मिलकर बाग़ियों से भी जंग कर चुके थे और बहरीन और उसके निकट में जो लोग इस्लाम पर क़ायम रहे थे और जिन्हों ने इस्लामी फ़ौजों के साथ मिलकर बाग़ियों की जंगों में हिस्सा लिया था हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु उन के सरदार थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आइन्दा इक़दाम के सम्बन्ध में अभी फ़ैसला करने न पाए थे कि हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद मदीना आ गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को इराक़ के हालात से सम्बन्ध में आगाह किया कि जो अरब क़बायल दिजला और फ़ुरात के डेल्टाई इलाक़ों में आबाद हैं वह वहां के मुक़ामी बाशिंदों के हाथों मुसीबत में हैं, उनको तंग किया जा रहा है। अरब ज़्यादा-तर खेती बाड़ी करते हैं और जब फ़सल पक जाती है तो मुक़ामी लोग लूट लेते हैं। इसलिए हज़रत मुसन्ना बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की कि इस्लामी फ़ौजें रवाना करके उन लोगों को मुसीबत से निजात दिलाई जाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना के अहले राए अस्हाब से मश्वरा किया और हज़रत मुसन्ना बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की तजवीज़ सामने रखी। चूँकि मदीना के लोग इराक़ के हालात से नावाक़िफ़ थे इसलिए मश्वरा दिया कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को बुला कर सारा मुआमला उनके सामने पेश किया जाए, उनसे मश्वरा लिया जाए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु उन दिनों यमामा में मौजूद थे। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मदीना तलब फ़रमाया। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के मदीना पहुंचने पर जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इराक़ पर फ़ौजकशी की, हज़रत मुसन्ना की तजवीज़ उनके सामने रखी, तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु का भी यह ख़्याल था कि हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु ने हद्दूद-ए-इराक़ में ईरानियों के ख़िलाफ़ जो कार्रवाई शुरू की है अगर ख़ुदा-ना-ख़ासता वे नाकाम हो गई और हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज को अरब की जानिब पसपा होना पड़ा तो ईरानी हुक्काम और दिलेर हो जाऐंगे।

वे केवल हज़रत मुसन्नाई रज़ियल्लाहु अन्हु की फ़ौज को इराक़ की हदूद से बाहर निकालने पर इकतेफ़ा नहीं करेंगे बल्कि बहरीन और इस के साथ जुड़े इलाक़ों पर दुबारा असर-ओ-रसूख़ क़ायम करने और तसल्लुत बिठाने की भी कोशिश करेंगे और ऐसी सूरत-ए-हाल में इस्लामी हुकूमत को ख़तरा पैदा हो जाएगा। लिहाज़ा उन्होंने भी यह कहा कि इस ख़तरा से बचने के लिए हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु को वास्तव में सहायता मुहय्या की जाए। वहां फ़ौज भेजी जाए और ईरानियों को अरब की हदूद में असर-ओ-रसूख़ जमाने की बजाय मज़ीद पसपाई पर मजबूर किया जाए ताकि उनकी जानिब से आइन्दा कभी अरब को कोई ख़तरा बाक़ी न रहे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी यह राय पेश की तो आपकी

यह राय सुनके दीगर अस्हाब ने भी हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु की तजावीज़ क़बूल कर लीं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु को उन लोगों का सरदार मुक़र्रर कर दिया जिन्हें हमराह लेकर उन्होंने इराक़ी हदूद में पेशक़दमी की थी और हुक्म दिया कि फ़िलहाल वहां के अरब क़बायल को साथ मिलाने और इस्लाम क़बूल करने पर आमादा करें और साथ ही यह भी फ़रमाया कि जल्द ही मदीना से एक लश्कर भी उनकी इमदाद के लिए रवाना कर दिया जाएगा जिसकी मदद से वे मज़ीद पेशक़दमी जारी रख सकेंगे।

कुछ इतिहासकारों का ख़्याल है कि ना मुसन्ना इमदाद की दरख़ास्त करने के लिए मदीना गए और न हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से उनकी मुलाक़ात हुई बल्कि वह अपने लश्कर के हमराह डेल्टाई इलाक़े में पेशक़दमी करते हुए बहुत दूर निकल गए और आगे जा कर ईरानी सिपहसालार की अफ़्वाज का सामना करना पड़ा। हुर उस वक़्त सरहदी अफ़्वाज का अफ़्सर था और किसरा के नज़दीक जो सबसे बड़ा दर्जा किसी शख़्स को मिल सकता था हुरमुज़ का शुमार उन लोगों में होता था। अभी हुरमुज़ और मुसन्ना के दरमयान जंग जारी थी कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को इन वाक़ियात की ख़बर हो गई। वे उस वक़्त मुसन्नाई के नाम से बिल्कुल बे-ख़बर थे। इन ख़बरों के पहुंचने पर जब उन्होंने तहक़ीक़ात कीं तो मालूम हुआ कि मुसन्नाई ने इर्तेदाद और बग़ावत की जंगों के दौरान बहरीन के अंदर मुतद्दिद कारहाए नुमायां अंजाम दिए हैं।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ालिद बिन वलीद को हुक्म दिया कि हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु की मदद के लिए एक लश्कर के हमराह इराक़ जाएं और हुरमुज़ पर फ़तहयाब हो कर हीरा की जानिब कूच करें।

हीरा भी कूफ़ा से तीन मील की दूरी पर एक शहर है। बहरहाल साथ ही हज़रत इयाज़ बिन गनम रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह दूमतुल जंदल जाएं। दूमतुल जनदल शाम और मदीना के दरमयान एक क़िला और बस्ती है जो मदीना से इस ज़माने के तरीक़ा-ए-सफ़र के मुताबिक़ पंद्रह सोला दिन की मुसाफ़त पर था और वहां के सरकश और मुर्तद बाशिंदों को मुतीअ करके ही पहुंचीं। हज़रत अयाज़ बिन ग़नम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुलह हुदैबिया से पहले इस्लाम क़बूल किया था और इस में शामिल भी हुए थे। हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी वफ़ात के वक़्त उन्हें शाम में अपना जांनशीन मुक़र्रर कर दिया था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें इस मन्सब पर क़ायम रखा और फ़रमाया कि मैं इस अमीर को तबदील नहीं करूँगा जिसे हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अमीर मुक़र्रर किया है।

बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अयाज़ बिन गनम में से जो पहले ही पहुंच जाए उसीको इस इलाक़े में जंगी कार्रवाई करने वाली फ़ौज की क़ियादत हासिल होगी।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, सिद्दीक़ अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल पृष्ठ 261 से 266 इशाअत 2004 ई.)(एटलस सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, पृष्ठ 68) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2 पृष्ठ 376 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत))(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 123)(ओसोदुल ग़ाबा, भाग 4 पृष्ठ 315 दारुल क़ुतुब इल्मिया)

एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु जब यमामा से फ़ारिग़ हो गए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें लिखा कि फ़रजुल हिंदी अर्थात अबुल्ला से आग़ाज़ करें और इराक़ के बालाई इलाक़े से इराक़ पहुँचीं और लोगों को अपने साथ मिलाया और उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत दें। अगर वे उसे क़बूल कर लें तो ठीक अन्यथा उनसे टैक्स वसूल करें और अगर वे टैक्स देने से इन्कार करें तो फिर उनसे क़िताल करें और हुक्म फ़रमाया कि किसी को अपने साथ क़िताल के लिए निकलने पर मजबूर न करें और इस्लाम से मुर्तद होने वाले किसी भी शख़्स से मददना लें चाहे वे बाद में इस्लाम में वापस भी आ चुका हो और जिस मुस्लमान के पास से गुज़रीं तो उसे अपने साथ मिला लें। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की इमदाद के लिए लश्कर की तैयारी में लग गए। (अल् बिदाया वन्नहाया लाबन भाग 3, हिस्सा 6 पृष्ठ 338 बाअस ख़ालिद बिन वलीद इलल इराक़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यमामा से इराक़ की तरफ़ कूच के वक़्त अपनी फ़ौज को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया था और सबको एक ही रास्ते पर रवाना नहीं किया था बल्कि हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी रवानगी से दो रोज़ क़बल रवाना किया। उनके बाद अदी बिन हातिम और आसिम बिन अम्र को एक-एक दिन के फ़ासले से रवाना किया। सब के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद रवाना हुए। इन सबसे हफ़ीर पर जमा होने का वादा किया ताकि वहां से एक दम अपने दुश्मन से टकराए। हफ़ीर से मक्का की तरफ़ जाते हुए पहली मंज़िल है। और यह लिखा है कि यह सरहद फ़ारस की तमाम सरहदों में शान-ओ-शौकत के लिहाज़ से सबसे बड़ी और मज़बूत सरहद थी और उसका हाकिम हुरमुज़ था। यहां का सिपहसालार एक तरफ़ ख़ुशकी में अरबों से लड़ाता था और दूसरी तरफ़ समुंद्र में हिंद वालों से।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 309 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)

(मोअज्जमुल बुल्दान,भाग 2, पृष्ठ 319)(अल्कामिल फ़िल तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 239 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

बहरहाल हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर की संख्या बहुत कम थी क्योंकि एक तो इसका बहुत हिस्सा जंग यमामा में काम आ चुका था। दूसरे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें हिदायत की थी कि अगर कोई शख़्स इराक़ नहीं जाना चाहे तो उस पर ज़बरदस्ती न की जाए और उसके साथ ही एक निहायत ही अहम हिदायत यह भी दी कि इसके इलावा किसी साबिक़ मुर्तद को जो दुबारा इस्लाम ले भी आया हो उस वक़्त तक इस्लामी लश्कर में शामिल न किया जाए जब तक ख़लीफ़ा से खासतौर पर इजाज़त हासिल न कर ली जाए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में मज़ीद सहायता भेजने के लिए लिखा तो उन्होंने केवल एक शख़्स काका बिन अम्र को उनकी मदद के लिए रवाना फ़रमाया। लोगों को बहुत ताज्जुब हुआ और उन्होंने अर्ज़ किया आप ख़ालिद की मदद के लिए केवल एक शख़्स को रवाना कर रहे हैं हालाँकि लश्कर का बेशतर हिस्सा अब उनसे अलैहदा हो चुका है, अलग हो चुका है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया जिस लश्कर में काका जैसा शख़्स शामिल हो वे कभी शिकस्त नहीं खा सकता। फिर भी काका के हाथ आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ालिद को एक ख़त भेजा जिसमें लिखा कि वे उन लोगों को अपने लश्कर में शामिल होने की तरग़ीब दें जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद बदस्तूर इस्लाम पर क़ायम रहे और जिन्हों ने मुर्तद होने वाले के ख़िलाफ़ जंगों में हिस्सा लिया। यह ख़त मौसूल होने पर हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने लश्कर को तर्तीब देना शुरू कर दी।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, सिद्दीक़ अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 268 मुद्रित 2004 ई.)

इराक़ के काश्तकारों के सिलसिला में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो वसीयत की थी और जो हिकमत अमली थी उसके बारे में लिखा है कि अरब इराक़ की सरज़मीनों में बतौर काश्तकार काम करते थे। फ़सल तैयार होने पर उन्हें बटाई का बहुत थोड़ा हिस्सा मिलता था। अक्सर हिस्सा इन ईरानी ज़मीन-दारों के पास चला जाता था जो इन ज़मीनों के मालिक थे। ये ज़मींदार ग़रीब अरबों पर बेहद ज़ुलम तोड़ते थे और उनके साथ ग़ुलामों से भी बदतर सुलूक किया करते थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इराक़ में अपने सिपहससलारों को हुक्म दे दिया कि जंग के दौरान में इन अरब काश्तकारों को कोई तकलीफ़ न दी जाए और न उन्हें क़तल किया जाए और न क़ैदी बनाया जाए। उद्देश्य उनसे किसी किस्म की बदसुलूकी न की जाए क्योंकि वे भी उनकी तरह अरब हैं और ईरानियों के ज़ुलम-ओ-सितम की चक्की में पिस रहे हैं। उन्हें इस बात का एहसास दिलाना चाहिए कि यहां अरबों की हुकूमत क़ायम होने से उनकी मज़लूमाना ज़िंदगी के दिन ख़त्म हो जाऐंगे और अब वे अपने हमक़ौम लोगों की बदौलत हक़ीक़ी अदल-ओ-इन्साफ़ और जायज़ आज़ादी और मुसावात से परिपूर्ण हो सकेंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की इस हिक्मत-ए-अमली ने मुस्लमानों को बेहद लाभ पहुंचाया। उनकी फ़ुतूहात के रास्ते में आसानियां पैदा हो गईं और उन्हें यह ख़दशा नहीं रहा कि पेशक़दमी करते वक़्त कहीं पीछे से हमला हो कर उनका रास्ता बंद न हो जाए।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, सिद्दीक़ अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 267-268 मुद्रित 2004 ई.)

जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने निबाज में पड़ाव डाला तो हज़रत मुसन्ना उस वक़्त अपनी फ़ौज के साथ खाफ्फान में मौजूद थे।

निब्बाज बस्रा और यमामा के दरमयान एक मुक़ाम है। खाफ्फान कूफ़ा के क़रीब एक जगह है। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ एक ख़त लिखा कि वे आप रज़ियल्लाहु अन्हुके पास आएं और उसके साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का वह ख़त भी भेजा जिसमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुसन्ना रज़ियल्लाहु अन्हु बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु की इताअत का हुक्म दिया था।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 18 August 2022 Issue No. 33

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

(तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 308 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 296) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 2 सफ़ा 434 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

ये सारी तारीख़ तिब्री की रिवायत है। पहले तो वह थी फिर यह था कि ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद भेजा था। बहरहाल फिर जंगें हुईं। कौन कौन सी जंगें हैं? क्या उनके नाम थे और उनकी फ़ुतूहात का वर्णन इन शा अल्लाह आइन्दा होगा। ये जंगें जो मुस्लमानों ने ईरानियों के ख़िलाफ़ इराक़ के इलाक़े में लड़ीं और अल्लाह तआला ने उनमें मुस्लमानों को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जो फ़ुतूहात अता फ़रमाएं उनका वर्णन होगा। इन शा अल्लाह।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्-फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 07 का शेष

थे और एतेकाफ़ बैठने वाला फिर दस दिन के लिए संसार से इस दृष्टि से अलग-अलग हो जाता है कि घर कारोबार की कोई फ़िक्र नहीं रहती। एतेकाफ़ इस लिए बैठते हैं ताकि उन अय्याम में सुबह से लेकर शाम तक अल्लाह तआला की इबादत करें। दूसरे लोग जो रोज़े रखते हैं तो वह साथ-साथ अपने काम भी करते हैं। रोज़ा रख के दफ़्तर भी चले जाते हैं। शाम तक चार बजे तक दफ़्तर रहते हैं। समय मिले तो शाम को आ के आधा रुकू एक रुकू या एक सिपारा या आधा सिपारा थोड़ा सा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लेते हैं। नमाज़ें काम के कारण से मुख़्तसर करके पढ़ते हैं। एतेकाफ़ में बैठने वाला जो नवाफ़िल के समय हैं इन में नफ़ल भी पढ़ सकता है ज़ुहर से पहले तक और ज़ुहर के बाद, फिर मगरिब के बाद इशा के बाद नवाफ़िल पढ़ सकते हैं। फिर क़ुरआन-ए-करीम पढ़ सकते है। हदीस पढ़ सकते है दीन का इल्म बढ़ा सकते हैं दुआएं कर सकसे हैं। मुकम्मल चौबीस घंटे उसके पास हैं उस का ध्यान इन दस दिनों में रोज़े रखने के साथ-साथ अल्लाह तआला की इबादत पर रहता है। और यह एक अधिक काम है जो वह कर रहा होता है और वह जो लोग अफोर्ड कर सकते हैं वह एतेकाफ़ बैठ सकते हैं बशर्ति के मस्जिद में बैठने की गुंजाइश भी हो। अतः यह सुन्नत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की और इस सुन्नत की पैरवी में लोग बैठते हैं।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि जिहाद से क्या मुराद है? हुज़ूर अनवर के दरयाफ़्त फ़रमाने पर बच्चे ने बताया कि मुझे बस इतना पता है कि ग़लत चीज़ है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि एक पहली बात यह बता दूं कि जिहाद या जंग जब भी मुस्लमानों ने की है तो मुस्लमानों ने कभी पहल नहीं की। हमेशा उन पर हमला हुआ या उनको तंग किया गया तो मुस्लमानों ने उत्तर दिया। एक जिहाद से जंग से वापस आ रहे थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया कि अब हम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की ओर आ रहे हैं और बड़ा जिहाद यह है कि अपने नफ़्स के विरुद्ध जिहाद करो। अर्थात अपने दिल की जो बुराईयां हैं उनको दूर करो यह भी जिहाद है। तब्लीग़-ए-इस्लाम करो यह भी जिहाद है क़ुरआन-ए-करीम के माध्यम से तब्लीग़ करना यह भी जिहाद है। अल्लाह तआला भी फ़रमाता है क़ुरआन-ए-करीम के माध्यम से संदेश पहुंचाना यह भी जिहाद है। जिहाद प्रयास करने को कहते हैं। कोई भी प्रयास किसी काम के करने के लिए जो तुम करते हो। वह जिहाद है। और यदि तुम अपने नेक काम करने के लिए प्रयास करते हो तो तुम जिहाद कर रहे हो। तुम्हारे अंदर कोई बुराईयां हैं तो उनको दूर करने के लिए तुम प्रयास करो तो यह तुम्हारा जिहाद है। यदि तुम तब्लीग़ करते हो और यहां जर्मनों को लिटरेचर पमफ़लेट तक़सीम करते हो तो यह भी जिहाद है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि तुम पूरे ध्यान से क़ुरआन-ए-करीम का इलम प्राप्त करने की प्रयास करते हो तो यह भी तुम्हारा ज्ञान बढ़ाने के लिए एक जिहाद है। केवल तलवार चलाना जिहाद नहीं है। इस को मुस्लमानों ने ग़लत ले लिया है। या मुस्लमानों की ओर मंसूब कर दिया गया। और वैसे आजकल के अनुकरण तो मुस्लमानों के यही हैं। इस लिए मैंने इस पर पर्याप्त सारे लैक्चर दिए है। तुम अभी इतने बड़े हो गए हो। सोला सतरह वर्ष के हो तो मेरे लैक्चर पढ़ लो तुम्हें जिहाद की समझ आजाएगी।

शेष आगे .....

★ ★ ★

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص بھی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad